डुठारिया में प्रवेश

जसोल में जीवित महोत्सव

डुठारिया में भोजनशाला का उद्घाटन

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला का मासिक मुख-पत्र

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

▪ वर्ष : 11 ▪ ▪ अंक : 2 ▪ ▪ 5 मई : 2014 ▪ ▪ मूल्य : 20 रु. ▪

श्री इंचलकरंजी नगरे

चातुर्मास हेतु भव्यातिभव्य नगर प्रवेश

आमंत्रण

पावन निश्रा

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्य
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.,
पू. मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.,
पू. मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा.,
पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा.

चातुर्मास स्थल
मणिधारी भवन,
श्रीपाद नगर,
इचलकरंजी

पावन सानिध्य

पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या
पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा., पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.,
पूजनीया डॉ. साध्वी श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा., पूजनीया साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्रीजी म.सा.,
पूजनीया साध्वी श्री दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी म.सा., पूजनीया साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म.सा.,
पूजनीया साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म.सा., पूजनीया साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म.सा.

चातुर्मास प्रवेश शुभ मुहूर्त

वीर सं. 2540 वि.सं. 2071 आषाढ सुदि द्वितीय अष्टमी
रविवार ता. 6 जुलाई 2014 प्रात: 8 बजे

सकल श्री संघ से इस पावन अवसर पर पधारने का हमारा हार्दिक अनुरोध है।

चातुर्मास आयोजक

श्री जैन श्वेताम्बर मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाडी संघ
श्रीपाद नगर, चांदनी चौक, इचलकरंजी- 416115 महाराष्ट्र
फोन- 0230 2420700

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात — उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. 04
2. गुरुदेव की कहानियाँ — उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. 05
2. प्रीत की रीत — साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. 07
3. श्री लोढ़ण पार्श्वनाथ — मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. 11
4. श्रमण-चिंतन — मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. 13
5. तत्त्वावबोध — मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. 18
6. ऐसे थे मेरे गुरुदेव — उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. 20
7. मेरे बारे में मेरी अनुभूति — साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. 22
8. पंचांग — मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. 25
9. समाचार दर्शन — संकलन 26-39
10. साधु-साध्वी समाचार — संकलन 40-41
11. सुरक्षक सूचि 42-45
12. जहाज मन्दिर वर्ग पहेली-97 — मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. 47
13. जटाशंकर — उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. 50

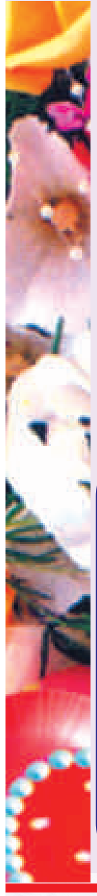

आगम मंजूषा

परमात्मा महावीर

जे अज्जत्थं जाणइ, से बहिया जाणइ।
जे बहिया जाणइ, से अज्जत्थं जाणइ।
एयं तुलमन्नेसिं

- आचारांग सूत्र 1/1/4

जो अपने अन्दर (अपने सुख-दुख की अनुभूति) को जानता है,
वह बाहर (दूसरों के सुख-दुख की अनुभूति) को भी जानता है।
जो बाहर (दूसरों के सुख-दुख की अनुभूति) को जानता है,
वह अन्दर (अपने सुख-दुख की अनुभूति) को भी जानता है।
इस प्रकार दोनों को, स्व और पर को एक तुला पर रखना चाहिये।

श्री कान्ति मणि विहार
नाशिक दादावाड़ी प्रतिष्ठा
ता. 18 जून 2014 बुधवार को
निश्रा- पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.
आशीर्वाद- पूजनीया गुरुवर्या श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.
प्रेरणा-सानिध्य- पूजनीया साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.

जहाज मन्दिर
मासिक

अधिष्ठाता
पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 11 अंक : 2 5 मई 2014 मूल्य 20 रू.

संयोजन : **आर्य मेहुलप्रभसागरजी म.**
अध्यक्ष : **संघवी जीतमल दांतेवाड़िया**
महामंत्री : **डॉ. यू.सी. जैन**

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद् संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	: 15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	: 11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	: 9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ	: 7,000 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

नवप्रभात

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

साधना का सूत्रपात

भविष्य की योजनाऐं बनाते समय हम अपनी स्थिति को केवल वर्तमान से ही तोलते हैं। आज मैं युवा हूँ... जो ऊर्जा और शक्ति आज मेरे पास है, वह संभवत: कल नहीं रहेगी।

बीतते हर पल और हर दिन के साथ मेरी शक्ति में परिवर्तन हो रहा है।

अपनी मध्य उम्र प्राप्त करने तक तो मैं अपने में ऊर्जा, शक्ति, क्षमता की निरन्तर ऊँचाईयाँ प्राप्त करता हूँ। पर उसके बाद मैं ढलान की ओर अग्रसर होता हूँ।

यदि मैं अपनी कुल उम्र सौ साल मानता हूँ तो पचास तक बढूंगा और उसके बाद ढ़लता जाऊँगा।

पर यह दशा तो शरीर की है। मन तो कभी बूढा होता नहीं। उसे शरीर की उम्र से कोई लेना देना नहीं होता।

मन शरीर की परिवर्तित हो रही दशा के साथ सामंजस्य नहीं बिठाता। वह सदा आज की स्थिति को अपने केन्द्र में रखता है और योजनाऐं बनाता जाता है।

वह यह नहीं सोच पाता कि आज मेरे पास जो ऊर्जा है... क्षमता है... वह कल नहीं रहेगी। क्षीण होगी।

और मन कितनी ही योजना बना ले, क्रियान्वित तो शरीर से जुड़ कर ही होगी। अकेला मन क्या कर लेगा! पर मन है कि वह कभी रिटायरमेंट लेने का नहीं सोचता। जबकि तन एक सीमा के बाद थकान का अनुभव करने लगता है। तब मन की सारी योजनाऐं धरी रह जाती है।

मन के विचारों और तन की क्षमता के साथ सामंजस्य बिठाना अपने आप में बहुत बडी साधना है। यह वही कर सकता है, जो लगातार अपने वर्तमान का दर्शन करता हो! जो केवल भविष्य की कल्पनाओं में नहीं या अतीत की घटनाओं में नहीं, अपितु अपनी वर्तमान स्थिति का साक्षात्कार तटस्थ दृष्टि से करता हो!

वो साधक ढलते तन को देखकर अप्रसन्न नहीं होता। बल्कि अपने प्रति और ज्यादा सजग हो जाता है। चढते तन के साथ उसकी दृष्टि भविष्य पर होती है। पर ढलते तन को देख कर वह वर्तमान-मुखी हो जाता है।
और ऐसा होते ही साधना का सूत्रपात हो जाता है।

गुरूदेव की कहानियाँ

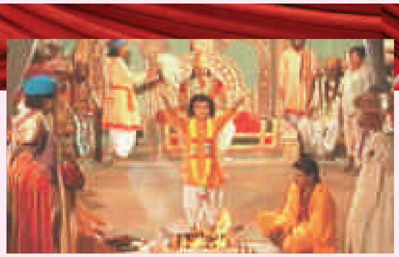

साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

श्रद्धा का अभिषेक

राजा राज्यसभा में सिंहासन पर आसीन था। अमर को वहाँ ले जाया गया। अमर ने ज्योंही राजा श्रेणिक को देखा उस अबोध को कुछ आशा जगी, शायद ये मेरे साथ न्याय करेंगे।

उसने हाथ जोड़कर राजा से कहा-राजन्! आप प्रजावत्सल माने जाते हैं। आप प्रजा के पालक हैं फिर आप अपने ही हाथों पुत्र समान मेरी रक्षा क्यों नहीं करते?

बालक! मैं क्या कर सकता हूँ? जब तुम्हारे माता-पिता ने तुझे बेच दिया तो मैं कैसे तेरी रक्षा कर सकता हूँ? तुम्हारी रक्षा का बोझ तो तुम्हारे माता-पिता पर है। उन्होंने ही तुझे बेचा। मैं तुम्हें बल से उठाकर नहीं लाया हूँ। राजा ने प्रत्युत्तर दिया।

असहाय अवस्था में रक्षक राजा ही माने जाते हैं। गरीब हूँ तो क्या हुआ मैं भी आपकी प्रजा हूँ आप मेरे पिता हैं। मेरी बलि मत चढ़ाइये।

पर राजा कैसे सुनता? उसकी आँखों के समक्ष तो चित्रशाला का दरवाजा तैर रहा था। उसका विवेक तो चित्रशाला में डूबा हुआ था। भौतिकता की आंधी इतनी तेज गति से राजा को आकर्षित कर रही थी कि एक मासूम बालक की हत्या पर वह उतर आया था।

बालक ने भटजी से निवेदन करते हुए कहा-क्या यही आपकी प्रजावत्सलता है। आपके शास्त्रों में यही लिखा हुआ है कि एक सामान्य शौक के कारण एक निर्दोष मासूम की बलि चढ़ा दी जाय। अगर चित्रशाला का दरवाजा स्थिर नहीं रहता है तो क्या हो जायेगा? एक झूठी शान में बहकर किसी खिलते फूल को कुचलना कहाँ की बुद्धिमता है? कहीं ऐसा हो जाय कि मेरी हाय आपकी इस चित्रशाला को उखाड़ दे।

भटजी ने उसे सान्त्वना देने की अपेक्षा नौकर से कहा-तुम इसे झट से स्नान कराओ, माला-वस्त्र आदि मौत के साज पहना दो। अन्य नौकर से कहा-इसके लिए प्रचण्ड चिता तैयार कर दो।

नौकर चुपचाप अमर को घसीटते हुए ले गए। कुछ ही समय में सारी तैयारी हो गई। गले में कणेर फूलों की माला पहना दी गयी। चिता भी तैयार हो गई।

अमर ने सोचा-अब कोई रक्षक नहीं है। अब तो मृत्यु का फासला क्षणों का है। जब मरना ही है तो रो-रोकर क्यों मरें? क्यों न इस मौत को हँसते-हँसते गले लगा लूँ? जब कोई सुनने वाला ही नहीं है तो किसी को सुनाने से क्या लाभ? यह सोचते-सोचते उसमें साहस का प्रवेश हो गया। उसने अपनी आँखें बन्द कीं और कुछ सोचने लगा पर जिस ओर भी उसकी आँखें उठीं, उसे कहीं भी सार तत्त्व नजर नहीं आया।

माता-पिता, पारिवारिकजन, राजा, मन्त्री सभी उसे घोर स्वार्थी ही नजर आये। उसका चिंतन चलता रहा और एक स्थान पर जाकर टिक गया।

उसकी स्मृति-पटल पर वह दृश्य उभर आया। जब वह एक बार गायों को चराने जंगल में गया था। वहाँ उसने एक जैन मुनिराज के दर्शन किये थे और जब उसने उन मुनि की भावपूर्वक वंदना की थी तब उन्होंने एक मंत्र सिखाया था और कहा था कि यह मंत्र अत्यन्त प्रभावशाली है, जब भी संकट की

घड़ी आवे उस समय इसका जाप करना। इससे सभी कष्ट और उपद्रव समाप्त हो जायेंगे।

अमरकुमार एकाग्र हो गया। चितासन पर ही उसने पद्मासन लगा लिया। आँखें बन्द कर दृढ़ मन से नमस्कार महामंत्र का स्मरण करने लगा।

इतने में उसके कानों में ये शब्द गूँज उठे, ''अमर कुमार की जय हो'', उसकी समाधि भंग हुई, उसने देखा-चारों ओर देव-देवियाँ नृत्य कर रहे हैं। राजा मन्त्री सभी बेहोश औंधे पड़े हैं। उनके मुंह से रक्त की धारा निकल रही है।

अमरकुमार समझ गया। सारा प्रभाव नवकार महामंत्र का है। उसने औंधे पड़े सभी लोगों पर पानी छिड़का। राजा स्वस्थ हुआ, मन्त्री आदि सभी होश में आ गये। सारी राज्यसभा चित्रलिखित सी चिता के स्थान पर सिंहासन को देखने लगी। लोगों ने बालक अमर का लोहा मान लिया। वे भी उसकी जय-जयकार करने लगे।

राजा ने विनम्र निवेदन किया-महापुरुष! देवों ने आपको सिंहासन का अधिकारी बनाया है अत: आप ही इस राज्य को ग्रहण कीजिए।

नहीं! मैंने अरिहंत परमात्मा, पंच परमेष्ठि का शरण स्वीकार कर लिया है। अब मैं उन्हीं की शरण में जा रहा हूँ जिनकी कृपा से मैं मौत के मुँह से बाहर आया हूँ। राजन्! मैं संसार का स्वरूप देख चुका हूँ, मुझे संसार से अब कोई लेना-देना नहीं। कुमार अमर की दृढ़ वाणी राज्यसभा में गूंज उठी।

उसी समय देव-प्रदत्त संयमी वेश अंगीकार कर पंचमुष्टि लोच कर दिया। अब अमर ने सभी को अलविदा एवं आशीर्वाद देकर जंगल की प्रयाण कर दिया। कहीं उद्यान में अच्छा-सा स्थान देखकर वहीं ध्यानस्थ हो गये।

अरे चाची! तुम्हारा लड़का तो बच गया और इस प्रकार ऐसा विराट चमत्कार दिखाकर गया है कि सारी सभा दंग रह गई, चिता उसके लिये सिंहासन बन गई। राजा-जन सभी उसके चरणों में गिर पड़े थे। वहीं राज्यसभा में दीक्षा ग्रहण की और जंगल में चला गया है।

माँ भद्रा यह सुनते ही अवाक् रह गई। अमर को बेचने के बाद उसने पुत्र शोक करना तो दूर, घर में आये सोने में से कुछ सोने को बेचकर राशन लाकर उससे बढ़िया-बढ़िया मिष्ठान्न बनाया था। जिस समय अमर को चिता पर बिठाया था उस समय घर में उत्सव मनाया जा रहा था पुत्र के जीवित रहने के समाचारों ने उस खुशी पर पाला मार दिया।

माँ उद्विग्न हो उठी। रात्रि में बिस्तर पर सोये-सोये उसने विचार किया-अभी तक तो राजा ने सुभटों को सोना लेने भेजा नहीं पर प्रात: होते ही यमदूत की तरह वे आ धमकेंगे। मैं क्या करूं जिससे मेरा धन बच जाय?

रात्रि को बारह के टंकोर ज्योंही पड़े त्योंही वह एक दृढ़ निश्चय लेकर उठ खड़ी हुई। उसने एक हाथ में छुरी पकड़ी और जब सारा परिवार घोर निद्रा में ऊँघ रहा था। उस समय वह अकेली अपने पुत्र को मारने चल पड़ी।

नारी, नारी-सुलभ भय की भावनाएँ खत्म कर वह विकराल स्वरूप धारण कर चुकी थी। उसका जन्म जन्मान्तर का वैर अमर को बेच कर भी समाप्त नहीं हुआ था।

वह लगभग दौड़ते-दौड़ते कि कोई देख न ले, इस प्रकार सम्पूर्ण सावधानी से अमर जहां पंचमेष्ठि ध्यान में तल्लीन था, उसके समीप पहुँची और भयंकर क्रूरता से अपने ही अंगजात पर छुरी फेर दी। अमर मुनि देहधारी होते हुए भी देहातीत थे। उनकी आत्मा बारहवें देवलोक की ऊँचाइयों तक पहुँच गई।

माँ ने निश्चिंतता की सांस ली। अब अगर सुभट मेरे पास धन मांगने आयेंगे तो मैं स्पष्ट कह दूंगी कि पहले मेरा पुत्र सौंपो और फिर धन लेकर चले जाओ।

प्रसन्नमना वह लौट रही थी, इतने में उसके सामने एक क्षुधातुर बाघण आई। बाघण ने ज्योंही अपना भक्ष्य देखा वह झपट पड़ी। उसके शरीर की हड्डियाँ भी साबुत नहीं बची। वहां से बाघण द्वारा मृत्यु पाकर छट्ठी नरक की घोर वेदना सहन करने के लिए वहां वह उत्पन्न हो गई।

प्रीत की रीत

साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

श्री पद्मप्रभस्वामी स्तवन

लौह धातु कांचन हुवे रे लाल,
पारस फरसन पाम रे वा.।
प्रगटे अध्यातम दशा रे लाल,
व्यक्त गुणी गुणग्राम रे वा.।।6।।

लोहा पारसमणि का स्पर्श पाते ही सोना बन जाता है। उसी प्रकार परमात्मा के गुणगान करने से अध्यात्म दशा प्रकट हो जाती है।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्जी की नम्रता और भक्ति की चरम सीमा झलकती है। स्वयं ऊँचे स्तर के साधक और स्वानुभवी होने पर भी लोहे की उपमा से उपमित करते हैं। इसी में उनका बड़प्पन है कि ज्यों-ज्यों वे आगे बढ़ते हैं त्यों-त्यों उनके हृदय की लघुता बढ़ती जाती है। अहंकार उनके हृदय से तिरोहित हो जाता है और समर्पण उनके रोम-रोम को ठंडी और पवित्र फुहारों से भिगोता रहता है।

समर्पण अपने आप में उच्च कोटि की साधना है। समर्पण वही कर सकता है जिसका हृदय प्रेम से परिपूर्ण होकर उसके प्रति तादात्म्य हो जाय, जिसके प्रति वह समर्पण करने जा रहा है। प्रसिद्धि का आकांक्षी, सत्ता और सम्मान का अभिलाषी समर्पण नहीं कर सकता। समर्पण के प्रतीक हैं गौतम स्वामी जिन्होंने अपने श्रद्धेय की उपस्थिति में कभी भी अपने अतीन्द्रिय ज्ञान का उपयोग नहीं किया। जिनके रोम-रोम में परमात्मा महावीर का प्रेम ही खून बनकर दौड़ रहा था। उनके रेशे-रेशे में महावीर का असीम वात्सल्य व्याप्त था। समर्पण की सीमाऐं तब तो टूट ही गयी जब प्रभु ने एक ओर केवलज्ञान की संपदा अथवा दूसरी तरफ अपने प्रति गहरा गुणात्मक राग में से किसी एक को चुनने का अवसर उपलब्ध करवाया। तपाक से गौतम स्वामी ने प्रभु की वात्सल्यमयी, अमृतमयी गोद का चुनाव करते हुए कहा-प्रभु! केवलज्ञान लेकर मैं क्या करूँगा क्योंकि आप मेरे लिये प्रतिपल उपलब्ध है। जो आपका है वह मेरा ही तो है। आपमें और मुझमें अंतर ही क्या है?आपसे अभिन्न हूँ प्रभो मैं! यह कितना सुखद अनुभव है मेरे लिये कि आपकी जुबां से बार-बार मैं गौतम का संबोधन सुनता हूँ। मुझे केवलज्ञान नहीं, आपका अखण्ड प्रेम मिलता रहे प्रभो!

गौतम स्वामी का जीवन स्मृतियों के घेरे में आते ही पाषण-हृदय भी पिघले बिना नहीं रहता। समर्पण की निर्मल खुश्बू से उनका प्रत्येक श्वास महकता था। यह समर्पण जन्मजात न था। परमात्मा महावीर की कर्ण-प्रिय आवाज का स्पर्श हुआ और उपादान अर्थात् आत्मा लौह से स्वर्ण हो गयी। परमात्मा की वाणी भटकते प्राणी को सत्य स्वरूप दिखाकर उसे सही मार्ग बताती है।

आत्मसिद्धि कारज भणी रे लाल,
सहज नियामक हेतु रे वा.।
नामादिक जिनराज ना रे लाल,
भवसागर मांहे सेतु रे वा.।।7।।

परमात्मा आत्मा की मुक्ति के लिये सहज और निश्चित कार्यसिद्ध करने वाले हैं। श्री अरिहंत परमात्मा नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव इन चारों ही निक्षेपों से संसार रूप सागर के लिये किनारे के समान हैं।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्जी ने आलंबन की महत्ता प्रतिपादित की है। जीव का एक मात्र लक्ष्य है शिव बनना। लम्बी यात्रा है चैतन्य के जागरण की! सामान्य यात्रा भी

ten
TM
Since 1998
Designing your Dreams
ALDROPS
TADI
HANDLES
HINGES
SCREWS
TOWER BOLT
CURTAIN BRACKET

GANPATI INDUSTRIES
54, Vikash ind. Estate, Opp. anil Strach Mill Road,
Nr. Muni Schol, Bapunagar, Ahmedabad-380 018.
e-mail : i10doorfitting@gmail.com
www.i10doorfitting.com : i10doorfitting
RATAN JAIN - 09426011536
JAGDISH JAIN - 09428813206
ANKIT BOHRA - 08866144731

एकाकी करते हिचकिचाहट होती है तो जीव से शिवत्व की महायात्रा में आलंबन का अभाव भटका देता है। साधना की प्रारम्भिक अवस्था में आलंबन आवश्यक है। आलंबन लिये बिना निरालंब नहीं बना जाता। आलंबन दो प्रकार के होते हैं-लौकिक और लोकोत्तर! व्यावहारिक और आध्यात्मिक! व्यावहारिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये उसके स्तर का आलंबन लेना होता है तो आध्यात्मिक स्पर्श के लिये आध्यात्मिक स्तर का आलंबन लेना अनिवार्य होता है।

जैसे लता बिना पेड का सहारा लिये ऊपर नहीं उठ सकती तो पंडित लोग भी राजाओं का आश्रय पाकर आजीविका की चिंता से मुक्त होकर अपना समूचा ध्यान अध्ययन और अध्यापन में केन्द्रित कर सकते हैं। ठीक उसी प्रकार से आत्मा को ऊर्ध्वारोहण के लिये किसी आध्यात्मिक आलंबन की आवश्यकता होती है।

चार निक्षेप माने गये हैं। परिचय के लिये किसी व्यक्ति या वस्तु को किसी नाम से सम्बोधित करना नाम निक्षेप है। जैसे महावीर, आदिनाथ, राम, कृष्ण आदि।

किसी पदार्थ या व्यक्ति का भान करवाने के लिये उसकी किसी फोटो या मूर्ति में स्थापना करना स्थापना निक्षेपा है। जैसे अरिहंत का बोध करने के लिये उनका मूर्ति में स्थापन करना।

जो व्यक्ति या वस्तु भूतकाल में थी अथवा भविष्यकाल में होगी परन्तु वर्तमान में नहीं है। उसे वर्तमान में आरोपित करना यह द्रव्य-निक्षेपा है। जैसे भूतकाल में कोई साधु था, स्वर्गवासी हो गया। वर्तमान में नहीं है। उसके नाम के साथ भी वर्तमान में साधु के समान ही मान सम्मान का व्यवहार करना। जो तीर्थंकर वर्तमान में नहीं है परन्तु भविष्य में होंगे उनका भी मूर्ति अथवा फोटो में आरोपण करना द्रव्य-निक्षेपा है।

व्यक्ति अथवा वस्तु में विद्यमान गुणों का समूह देखकर, अवस्था देखकर उस प्रकार की व्याख्या करना भाव निक्षेपा है। जैसे किसी श्रावक को साधु जैसा जीव व्यतीत करता देखकर उसमें साधुत्व के भाव का आरोपण करना भावनिक्षेप है।

परमात्मा का आलंबन लेने के बाद डूबता भी तैर जाता है। संसार की संपदाऐं मन को आकृष्ट करती है परन्तु जब परमात्मा के पवित्र और निर्दोष जीवन का, उनके नाम स्मरण का, उनके भव्य दर्शन का सहारा मिल जाता है तो संसार की समस्त संपदा फीकी और नीरस हो जाती है। मन शांत और पवित्र बन जाता है। परमात्मा के दर्शन की घटा हमारे अनादिकालीन गर्मी को शांत कर सकती है।

स्थंभन इन्द्रिययोग नो रे लाल,
रक्त वर्ण गुण राय रे वा.।
देवचन्द्र वृंदे स्तव्यो रे लाल,
आप अवर्ण अकाय रे वा.।।8।।

परमात्मा पद्मप्रभु की गुणयुक्त रक्त वर्ण की शोभा भी इन्द्रियों के संवर में स्तंभन मंत्र का कार्य करती है। देवेन्द्रों द्वारा भी पूजनीय यद्यपि आप वर्तमान में तो सिद्धत्व को प्राप्त हो जाने से रंग और शरीर दोनों से ही मुक्त है।

व्यक्ति को प्रभावित करने का काम सबसे ज्यादा आभा मंडल करता है। कुछ व्यक्तियों के निकट बैठने पर अद्भुत तृप्ति, शांति और समाधि उपलब्ध होती है तो कुछ के निकट जाने पर हमारे अपने अध्यवसायों में भी मलीनता और बैचेनी आ जाती है। व्यक्ति अपनी क्रिया और आचरण के द्वारा जैसा है, उससे विपरीत अपने आपको दिखा सकता है। जैसे कोई व्यक्ति अत्यंत अहंकारी होता है परन्तु किसी से मिलने पर इतनी अधिक नम्रता का प्रदर्शन करता है कि स्वयं नम्रता भी धोखा खा जाय। नकली और असली में कोई सामंजस्य नहीं रहता परन्तु आभामंडल अथवा भाव जगत एक ऐसा जगत है, जहाँ मानव की असली पहचान ग्राफ पर उतरे बिना नहीं रहती। जो जैसा है वैसा ही दिखेगा।

यात्रा के अनुभव

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

श्री लोढ़ण पार्श्वनाथ

इचलकरंजी चातुर्मास के लक्ष्य से हमारा विहार हो रहा है। आज की दुनिया होडा होड में दौड़ रही है। भागमभाग के इस युग में जैन साधु का यह विहार उपक्रम एक महाश्चर्य कहा जाये तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

समस्त वाहन सुविधाओं का परित्याग करके जीवन पर्यन्त पदयात्रा के द्वारा अहिंसा, स्वावलम्बन और तितिक्षा का संदेश, जैन आचार प्रणालिका का अनूठा कार्य है।

10 अप्रेल को बडौदा में एक दिन का प्रवास करके हम खानदेश की ओर चल पड़े।

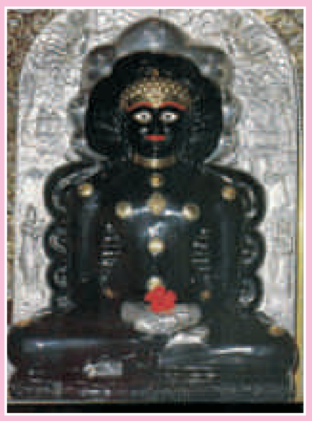

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हम डभोई तीर्थ पहुंचे। प्राचीन काल में दर्भावती के नाम से प्रसिद्ध यह पावन धरा अपने आप में साधना, त्याग और तप की महातीर्थ भूमि रही है।

दर्भावती तीर्थ अर्थात् ऋषियों, मुनियों और पावन आत्माओं की साधना-स्थली! दर्भ अर्थात् घास। यहाँ जैन साधु-संत विपुल संख्या में आत्म-साधना के लक्ष्य से रहते थे। उनका संथारा (बिछौना) दर्भ का होता था। अतः दर्भ की अधिकता के कारण इसका नाम दर्भावती पड़ गया।

दर्भावती के नाम से ही लोढ़ण पार्श्वनाथ की महिमा स्मृति पटल पर उभर आयी। एक सौ आठ पार्श्वनाथ में लोढ़ण पार्श्वनाथ का इतिहास अपने आपमें अद्भुत है।

सागरदत्त नामक एक व्यापारी। जिन धर्म में पूर्ण श्रद्धावान्! परमात्मा की पूजा के बिना मुँह में पानी न ड़ाले, ऐसा पावन संकल्प। जब कभी प्रवास पर निकले तो परमात्मा प्रतिमा साथ में रखे। अष्ट प्रकारी पूजा की सामग्री से प्रतिदिन पूजन-विधान। एक बार ऐसा बना कि वह व्यापारार्थ दर्भावती नगर में आया पर परमात्मा को लाना भूल गया।

अब क्या करें। पूजन किये बिना अन्नजल का ग्रहण हो नहीं सकता! कितने दिन परमात्मा के बिना रहना। उन्होंने मिट्टी से जिनप्रतिमा का निर्माण किया और अपने गृह मंदिर में स्थापित की। इन प्रतिमा का प्रतिदिन भावोल्लास से पूजन करने लगे। चातुर्मास की पूर्णता के उपरान्त पुनः जब स्वदेश की ओर लौटने लगे तब प्रभावशाली प्रतिमा को नगर के मध्य में आये एक कुएँ में विसर्जित कर दी।

व्यवसायार्थ एक बार सार्थवाह के साथ सागरदत्त का पुनः दर्भावती में आना हुआ।

मध्य रात्रि का समय।

आकाश में टिमटिमाते तारे!

ज्योत्स्ना की शीतलता जैसे दिवस भर के थकान के ताप को दूर करने का यत्न कर रही थी।

बंद नयन! स्वप्न में यक्षाधिराज का प्रकटीकरण!

सागरदत्त! तुम्हारे जीवन में पुण्योदय का सूरज चमकने वाला है। एक विशिष्ट कार्य तुम्हें कल ही सम्पन्न करना है। परमात्मा पार्श्वनाथ की प्रतिमा का उद्धार करना है। उस प्रतिमा का पुण्य जाग चुका है। अर्द्धपद्मासन में बिराजमान परमात्मा न केवल दर्भावती में पूजे जायेंगे अपितु संपूर्ण भारत में इस परमात्मा का नाम गूंजेगा। दूर-सुदूर प्रदेशों से भक्त पूजा के लिये दर्भावती आयेंगे। भारत के नक्शे पर दर्भावती चमक उठेगा।

स्वप्न की बात जैसे वायु की भांति पूरे शहर में फैल गयी। सभी लोग उस प्रतिमा पर अधिकार जताने लगे। आखिर निर्णय किया गया कि जो लोग इस प्रतिमा को कुएं से बाहर निकाले, प्रतिमा उनकी। सारे सम्प्रदाय अपने-अपने लोगों के साथ बाजते-गाजते कुएँ की ओर पहुँचने लगे।

उन्होंने प्रतिमा पाने का पूरा यत्न किया पर प्रतिमा कुएँ से बाहर नहीं निकली तो नहीं निकली। इस तरफ सागरदत्त भी सकल संघ, इष्टमित्र, स्वजन-परिजन के साथ कुएं की ओर चल पड़ा।

ढ़ोल की मधुर थाप।

कुंकुम का छिडकाव।

परमात्मा पार्श्वनाथ की जयकारों से गूंजायमान अवनि-अम्बर!

सागरदत्त की चाल में गंभीरता।

अधर पर फैली मधुर मुस्कान। प्रफुल्लित चेहरा। जैसे जैसे कुआं निकट आ रहा था, वैसे-वैसे हृदय का भावोल्लास बढ़ता जा रहा था। गहरा कुआँ। पानी से भरा हुआ। चारों ओर उग आयी हरी घास। चर रही गाये।

अब तो सब्र का बांध मर्यादा का उल्लंघन करने लगा।

मेरे परमात्मा!

मेरे पार्श्वनाथ!

मेरे तारणहार!

सागरदत्त ने मन में नवकार का ध्यान किया!

पंच परमेष्ठी को बिराजमान किया!

यक्ष धरणेन्द्र को प्रणाम किया!

हाथ में लिया कच्चे सूत का धागा! उससे बंधी छलनी।

पंच परमेष्ठी मुद्रा का विधान करके उस छलनी को कुएं में डाला....

जैसे बहती हवा थम गयी!

विचार रूक गये!

मन ठहर सा गया!

पूर्ण निस्तब्धता! कोई हलचल नहीं...! बाहर में भी, भीतर में भी!

अगले ही पल आश्चर्य से भर गयी। श्रद्धा से आंखों के किनारे भीग गये।

परमात्मा पार्श्वनाथ कच्चे सुत के तार से बंधी छलनी में बिराजमान होकर बाहर आ गये। अम्बर गूंज उठा-

पार्श्वनाथ भगवान की जय!

पूजारी ने हमें बताया कि महिनों तक पानी में रहने पर भी परमात्मा ज्यों के त्यों रहे अतः कालान्तर में ये परमात्मा लोढ़ण पार्श्वनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुए।

पुजारीजी कहते जा रहे थे- साहेबजी! आप देख रहे हैं कि लोढ़ण पार्श्वनाथ प्रभु उवसग्गहरं पार्श्वनाथ से लगभग मिलते झुलते हैं। वैसा ही श्यामवर्ण! वैसे ही नागराज का नीचे से ऊपर की ओर जाना और फण फैलाकर पार्श्व प्रभु पर स्थापित होना।

मैंने बीच में ही पूछा पुजारीजी! जब लोढ़ण पार्श्वनाथ इतने चमत्कारी है तो ये भूगर्भ में क्यों बिराजमान है। क्या इन्हें मंदिर के मूलनायक रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न नहीं किया गया?

महाराजजी! इसका भी एक खास इतिहास है। जब परमात्मा प्रकट हुए तो प्रश्न यह था कि परमात्मा कहाँ बिराजमान हो! कुछ लोगों ने अधिकार भी जमाया.. तर्क-वितर्क भी हुए अन्ततः परमात्मा को बिना बैल की गाड़ी में बिराजमान किये गये। वह बेलगाड़ी चलती-चलती इसी स्थान पर रूक गयी और लोढ़ण प्रभु यहाँ प्रतिष्ठित हो गये।

यद्यपि प्रभु को ऊपर के मूल गर्भगृह में बिराजमान करने के कितने ही प्रयत्न किये गये परन्तु परमात्मा टस से मस नहीं हुए। एक इंच भी नहीं हिले क्योंकि परमात्मा स्व प्रतिष्ठित थे।

महाराजजी! परमात्मा हजारों वर्ष प्राचीन है। प्राचीन काल में प्रतिमा लघु आकार की थी। इसे परमात्मा का अतिशय ही कहना होगा कि जिस प्रकार जन्मजात एक नवशिशु प्रतिदिन नूतन आकार को प्राप्त होता है उसी प्रकार ये परमात्मा भी प्रतिदिन चावल के दाने जितनी ऊँचाई-मोटाई प्राप्त करते रहे। जब प्रतिमा 48 इंच प्रमाणोपेत हो गयी, तब इसकी वृद्धि रूक गयी। एक तरह से परमात्मा इस ऊँचाई पर आकर स्थिर हो गये। इन सारी चमत्कारिक तथ्यों को ज्ञातकर हृदय श्रद्धा रस से छलक उठा।

शा. मांगीलाल-विमला
जितेन्द्र-सीमा,
मनीष-ज्योति, कपिल-मंजू,
पौत्र : रजत, प्रशांत
बेटा-पोता आसुलालजी गोपचन्दजी मालू,
चौहटन-बाड़मेर-सुरत

मांगीलाल मालू
093747 13889,
081288 20000

जितेन्द्र मालू
093759 60465,
081288 30000

Firm
RAMDEV CORPORATION
H - 2550, R.K.P.M., Ring Road
SURAT (GUJ.)
Phone : (0261) 2322025, 2352025

19
श्रमण
चिंतन

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

संसार में धर्म–साधना कहाँ ?

गतांक से आगे...

गुरु–शिष्य का संवाद चल रहा है।

शिष्य ने पूछा है– गुरुदेव! आनंदादि दस महाश्रावक भी एकावतारी हुए हैं। मैं भी श्रावक धर्म की उत्तम आराधना करके अल्प भवों में मोक्षगामी हो ही सकता हूँ।

शिष्य! तूं भी कैसी बातें करता है! तूं सोचता है कि गृहस्थ बनकर एकावतारी बन जायेगा। पर यह अतिदुष्कर कार्य है।

सबसे पहली बात– तूं आनंदादि के जैसा द्वादश व्रत–परिपालन नहीं कर पायेगा!

ऐसा क्यों सोचते हैं आप! क्या मेरी शक्ति और धर्मोल्लास के प्रति आपके मन में शंका हैं?

शिष्य! शंका है तभी तो कह रहा हूँ क्योंकि तूं संसार का रागी, विषयों का भोगी एवं संयम का त्यागी बनकर श्रावक बन रहा है! कोई मजबूरी होती तो अलग बात!

गुरुदेव! मेरी मजबूरी ही तो है।

शिष्य! झूठ बोल रहा है तूं! या फिर तुझमें सोच की क्षमता नहीं रही।

देख! मजबूरी उसे कहते हैं जो किसी भी कीमत पर संसार में ले जाती है। मैं तुझे एक उदाहरण सुनाता हूँ।

नंदीषेण मुनि के मन में कामनाएँ नाचने लगी। दिन में आराम नहीं, रात में नींद नहीं! जैसे हृदय का चैन–सुकून छीन गया!

स्वाध्याय करने बैठे तो वासना के विचार!

कायोत्सर्ग करे तो अबह्मचर्य की कामना।

पर मुनि थे अनुपम! उनका जीवन, चिन्तन और साधना, सब कुछ अत्युत्तम! निराली!

उनका संकल्प दिव्य... अनुत्तर...! जागृत प्रज्ञा! मोहनीय कर्म का क्षयोपशम हुआ तब कहीं जाकर चारित्र का वेश मिला।

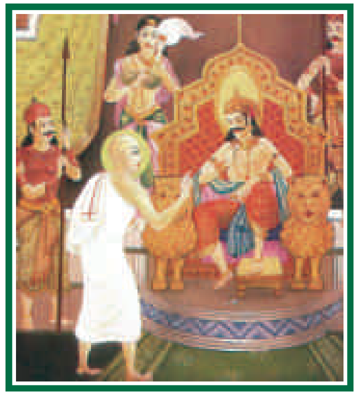

अब उसी संयमवेश को छोड़कर संसार में चला जाऊँ। यह असंभव है। मैं संयम की आन–बान–शान रखने के लिये अपनी श्वासों को भी दांव पर लगा सकता हूँ।

नंदीषेण मुनि ने आत्महत्या के हजार प्रयत्न किये पर देवयोग से सारे निष्फल रहे।

देववाणी हुई– नंदीषेण! तेरे चारित्र मोहनीय कर्म का अन्तराय अभी भी अवशिष्ट है। अत: तुझे संयम वेश छोड़कर निकाचित भोगावली कर्मों को भोगना ही पड़ेगा।

इसे कहते हैं मजबूरी! शिष्य! सुन एक और सच्ची घटना!

एक बहिन! धर्म में रूचि वाली! दीक्षा ली और अंधी हो गयी!

रोशनी के अभाव में जीवन अंधकार से भर गया। ईर्या समिति का पालन कैसे करे?

With best compliments from ASHOK M. BHANSALI

M.A.ENTERPRISES

Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

स्वाध्याय की साधना कैसे हो?

सारे उपचार किये!

शंखेश्वर पार्श्वनाथ की आराधना!

अधिष्ठायक देव की साधना!

मौन, जाप एवं मंत्र की विशिष्ट उपासना!

पर सब कुछ व्यर्थ!

मजबूरी वशात् रोती आँखों एवं पीड़ित हृदय के साथ उसे गृहवासी बनना पड़ा।

दूसरे ही दिन जैसे आश्चर्यजनक घटना घटी! वह श्राविका पुनः सुनयना बन गयी! आँखों में रोशनी उतर आयी। उस बहिन ने फिर से दीक्षा ली फिर अंधत्व की प्राप्ति! पांच बार दीक्षा ली और नयन की रोशनी चली गयी! पांच बार दीक्षा छोड़ी और आंखें ठीक हो गयी। थक-हार कर उस बहिन को संसार में ही रहना पड़ा। कोई उसके संयम में अंतराय उपस्थित कर रहा था।

मुनिवर! अब समझे कि नहीं?इसे कहते हैं मजबूरी! कर्मों का चक्कर।

तूं यदि गृहस्थ बनेगा तो वहाँ धर्म की साधना सुलभ नहीं है।

तूं सोच रहा है कि घर जाकर महाधर्म की महाराधना करूंगा।

तूं मान रहा है कि अच्छा श्रावक बनकर आसन्न भवी बनूंगा।

तूं जान रहा है कि श्रावक जीवन के बारह व्रतों का निरतिचार पालन करके एकावतारी बनूंगा। पर यह सब तेरे लिये कठिन नहीं, अति दुष्कर है।

पर क्यों गुरुदेव?

सोच! क्या तुझमें आनंदादि श्रावकों जैसी सत्व की पराकाष्ठा है कि ग्यारह प्रतिमाओं को धारण कर सके?क्या तेरे पास श्रेणिक, अर्हन्नक श्रावक जैसी अनुपम आस्था का खजाना है?

नहीं मुने! नहीं। यदि सत्त्व और वीर्य होता तो तूं साधु जीवन के उपसर्गों को समता से सह नहीं लेता! यहाँ संयम की सुरक्षा में प्राणों को त्याग देता पर गृहवासी की बात कभी नहीं सोचता।

संयम का जीवन धर्म साधना का जीवन है। यहाँ के वातावरण में धर्म की खुश्बू रही हुई है! यहाँ की फ़िजाओं में जप-तप की गीतिकाएँ लिखी हुई है।

साधु जीवन में......

श्वास प्रश्वास में भी धर्म का चिन्तन है।

उठने-बैठने-सोने-जागने में जयणा का विचार है।

स्वाध्याय के द्वारा निजात्म शुद्धि का प्रावधान है।

बोलने-देखने रखने-उठाने में संयम की अनुगूंज है।

ऐसा महामूल्यवान जीवन जहाँ हर क्रिया-प्रक्रिया-प्रतिक्रिया संयम के धरातल पर धड़कती है।

इसका महत्त्व शास्त्रकार फरमाते हैं-

प्रव्रज्या गृहते धन्यैः धन्यैश्च परिपाल्यते!
प्रव्रज्या कार्यते धन्यैः धन्यैश्च अनुमोद्यते!!

वे लोग धन्य है....

जो प्रव्रज्या स्वीकार करते हैं।

जो प्रव्रज्या का निरतिचार पालन करते हैं!

जो प्रवज्या का महोत्सव करते हैं।

जो प्रव्रज्या की भूरि-भूरि अनुमोदना करते हैं।

प्रव्रज्या धन्य क्यों है?

यह पथ धर्म-साधना का है! मुक्ति की उपासना का है। इसीलिये प्रव्रज्या स्वयं धन्य है। प्रव्रज्या लेने वाले, देने वाले, देखने वाले, महोत्सव करने वाले, अनुमोदन करने वाले, सभी धन्योत्तम धन्य हैं।

गृहस्थ का जीवन अप्रव्रज्या का जीवन है!

अधर्म और अनीति का जीवन है!

वहाँ शोषण का पोषण है। अनीति की रीति है! अन्याय की आय है। विकार के विचार है।

धर्म तो मात्र साधुता के आधार पर टिका हुआ है। जहाँ

Diploma®
Metal Industries
For Better Cooking & Economy

Mfg. Of Stainless Steel Utensils

B-7, RAVI ESTATE, AMBIKA NAGAR, ODHAV
Ahmedabad-382415 (Gujarat)

B.L.Bothra 09426170801 Ramesh 09427031294
Jitesh 09427031295 Sunil 09429021264

संयम, वहाँ साधुता, वहाँ धर्म! यहाँ सहज ही साधुता सिद्ध होती है। क्योंकि अणु-अणु में धर्म की रंगोलियां रची गयी है। गृहस्थ जीवन में धर्म की आराधना इतनी सुलभ, शक्य और सरल नहीं है, जितनी तूं सोच रहा है। गृहस्थ जीवन में कितने ही आरंभ सभारंभ करने पर भी सुख-शांति की प्राप्ति तो दिवा स्वप्न होगी। तूंने देखी-जानी-समझी संयम जीवन की साधना! अब देख, गृहस्थ जीवन में विराधना की दुर्गतिमयी परम्परा!

- पेट-पालन के लिये भोजन जरूरी है अत: तुझे वनस्पति, पानी, अग्नि आदि संख्य-असंख्य-अनन्त जीवों की महाहिंसा का पाप करना पड़ेगा।

- तृषा-शान्ति, स्नान, वस्त्रादि प्रक्षालन आदि में अप्काय के जीवों की घोर विराधना का काला कलंक तेरे माथे लगेगा।

- व्यापार में असत्य, अनीति, अप्रामाणिकता, मायाचार, मिलावट, रिश्वतखोरी, कालाबाजारी जैसे महापाप तुझे नरक की चौखट तक घसीट कर ले जायेंगे।

- जिस समय तूं प्रतिक्रमण करके अपनी आत्म शुद्धि का ग्राफ ऊँचा उठाता है, उस समय रात्रि भोजन आदि से भयंकर कर्म बन्धन करेगा।

- स्त्री का दु:ख भी जालिम है। कब रूठकर वह आत्महत्या कर बैठे, मायके जाकर बैठ जाये, पता नहीं चलेगा तब तेरी शांति की गंगा घोर अशांति के दावानल में बदल जायेगी।

- पुत्रों के दु:ख भी कम नहीं! पुत्र नहीं हो तो दु:ख और हो तो भी दुख! उनकी पढ़ाई, भोजन, वस्त्र, आजीविका का प्रबन्ध भी चिन्ता की बात है। वे बड़े होकर जब सामने बोलेंगे। तेरा तिरस्कार, अनादर करेंगे तब तेरा मन समता व सामायिक में कैसे लग पायेगा?तूं क्रोध की सुलगती भट्टी में जलकर भस्म हो जायेगा।

- हो सकता है, तुझे वृद्धाश्रम में छोड़ दे तब तेरी आत्म समाधि का क्या होगा?आर्तध्यान-रौद्रध्यान तुझे दुर्गति के दलदल में डाल देंगे।

- परिवार एवं व्यापार से थका-हारा तूं न तो प्रभु-पूजा कर पायेगा न प्रवचन श्रवण।

- लाभ-हानि का ब्यौरा तूं आठ नौ बजे लिखेगा तब भला तुझे आत्म-चिन्तन, स्वाध्याय और रात्रि जागरणिका के लिये समय कहाँ से मिलेगा?

- समाज के रीति-रिवाजों में झकड़ा तूं गुरुवंदन, सुपात्रदान और हित-श्रवण का समय नहीं निकाल पायेगा। निष्कर्ष रूप में तूं समझ सकता है कि तूं सब कुछ पाया हुआ खो बैठेगा। महानिर्धन! कंगाल! भिखारी से भी गयी बीती हालत तेरी होगी।

तेरा आनंद लूट जायेगा।
तेरा सुख छूट जायेगा।
तेरा धर्म-कर्म खूट जायेगा।
तेरा चित्त की प्रसन्नता का परिसमापन।
तेर अन्तर की समाधि का संपूर्ण पर्यवसान।

नरक और तिर्यंच के दु:खों को निमंत्रण पत्रिका। दोनों ओर से तूं जीती हुई बाजी हार जायेगा। इहलोक में निंदा, अपयश, पराभव, हीनभाव, तिरस्कार एवं परलोक में इन्द्रिय छेदन, हीन इन्द्रिय, तिर्यंचत्व, बीमारी के आतंक झेलने पड़ेंगे।

इसलिये साधु! समझदार बन! चिन्तन कर!

गृहस्थ में धर्म की आराधना दुर्लभ है, अशक्य प्राय: है!

मैं तो तेरे सुख के लिये सोच रहा हूँ कि संयम की सम्पदा मत गँवा। निर्धन मत बन। आराधना के उपवन से विराधना के कंटक वन में प्रवेश मत कर। इसलिये याद रख-**'दुल्लहे खलु भो गिहीणं धम्मे गिहवासमज्झे वसंताणं'**।।

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

चतुर्भंगी का चमत्कार

५९. देखना और पकड़ना

1. जिसे देख भी सकते हैं, पकड़ भी सकते है- **वृक्ष, मनुष्य आदि को**
2. जिसे देख नहीं सकते परन्तु पकड़ सकते- **वायु, शब्द आदि को**
3. जिसे देख सकते है पर पकड़ नहीं सकते- **परछाई को**
4. जिसे देख भी नहीं सकते, पकड़ भी नहीं सकते- **आत्मा को, सूक्ष्म जीवों को**

६०. योग-भोग

1. योगी देखकर योगी बने- **इलायची कुमार**
2. भोगी देखकर योगी बने- **आदिनाथ**
3. भोगी देखकर भोगी बने- **कण्डरिक मुनि, अरणिक**
4. योगी देखकर भोगी बने- **रथनेमि, सुकुमालिका, आर्द्रकुमार**

६१. सुप्त-जागृत

1. द्रव्य से सुप्त, भाव से जागृत- **कूर्मापुत्र, गर्भस्थ तीर्थंकर**
2. द्रव्य से जागृत, भाव से जागृत- **तीर्थंकर, गणधर**
3. द्रव्य से जागृत, भाव से सुप्त- **अंगारमर्दकाचार्य**
4. द्रव्य से सुप्त, भाव से सुप्त- **महाशतक की पत्नी रेवती, एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय**

६२. चार पुरुष

1. सुखी को देखकर दु:खी होने वाला- **अधम पुरुष- सती सीता की सौतन**
2. सुखी को देखकर सुखी होने वाला- **उत्तम पुरुष- श्रीराम**
3. दु:खी को देखकर दु:खी होने वाला- **मध्यम पुरुष- भगवान नेमिनाथ, भगवान महावीर**
4. दु:खी को देखकर सुखी होने वाला- **अधमाधम पुरुष- दुर्योधन, कंस**

६३. काया और भाव

1. काया छोटी, भावना मोटी- **मेंढ़क के भव में नन्दमणियार, अनुत्तर विमान के देव**
2. काया छोटी, भावना खोटी- **तन्दुलमत्स्य**
3. काया मोटी, भावना खोटी- **सातवीं नरक के मिथ्यात्वी जीव**
4. काया मोटी भावना मोटी- **भरत चक्रवर्ती**

६४. युद्ध बाहर-भीतर

1. बाहर का युद्ध किया पर भीतर नहीं- **ब्रह्मदत्त चक्री**
2. भीतर का युद्ध किया पर बाहर का नहीं- **परमात्मा महावीर**
3. बाहर-भीतर के दोनों युद्ध किये- **शान्तिनाथ भगवान**
4. बाहर-भीतर, दोनों युद्ध नहीं किये- **एकेन्द्रिय प्राणी**

धर्म का सच्चा स्वरूप संप्रदायवाद की कट्टरता में नहीं,
सरलता, साधुता और सहिष्णुता में परिलक्षित होता है।

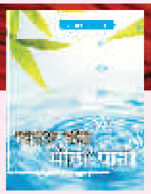

COMING SOON

1. **सुवास वाटिका**- बालकों को संस्कारों की सुवास देने वाली सुवास वाटिका में 20 **Lesson** दिये गये है जिसमें कथा, तत्त्वज्ञान, पहेली आदि दिये गये हैं। सरल, सुन्दर और सरस पद्धति में इस पुस्तक का आलेखन पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने किया है। हर लेशन के अन्त में **Exercise** का नूतन प्रयोग है जिससे बालकों में ज्ञान के प्रति रूचि जागृत होगी।

सुवास वाटिका प्रथम खण्ड रंगीन चित्रों के साथ रंगीन प्रकाशित हो रही है।। इस पुस्तिका का मूल्य मात्र 30 रुपये रखा गया है। वर्तमान की भौतिक चकाचौंध में सही दिशा और दिशा का निर्देशन देने वाली 'सुवास वाटिका' जीवन का अमूल्य उपहार है।

2- **Mind Management**- मन का प्रबंधन सर्वाधिक जरूरी है। मन के समुचित प्रबंधन के अभाव में जीवन चिन्ता के जाले, तनाव की दुर्गन्ध, ईर्ष्या की उष्णता से भर जाता है। और जीवन को नीरस, शुष्क और बोझिल बना देता है।

मेनेजमेन्ट सीरिज के दूसरे भाग के रूप में 64 पृष्ठ वाली संपूर्ण रंगीन, आर्ट पेपर पर सजी सुन्दर सामग्री का आलेखन मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. ने किया है।। पूज्य उपाध्याय श्री के आशीर्वाद एवं साध्वी डॉ. नीलांजना श्री जी म.सा. के सम्पादन ने इसे नया निखार दिया है। इसका मूल्य मात्र 20 रु. रखा गया है। पूर्व में मुनि श्री द्वारा आलेखित **Life Management** अत्यन्त प्रसिद्ध हुई थी।

3. **प्यासा कंठ मीठा पानी**- जैन तत्त्वज्ञान, दर्शन, इतिहास आदि अनेक विषयों को प्रश्नोत्तर की शैली में प्रस्तुत प्यासा कण्ठ मीठा पानी का तृतीय संस्करण नयी स्टाईल में प्रकाशित हो रहा है। 660 पृष्ठों वाले तथा 17000 प्रश्नोत्तर वाले इस विशाल प्रश्नोत्तर ग्रंथ का लेखन संकलन-संयोजन पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने किया है। मात्र 200 रुपये में पुस्तक उपलब्ध है।

पुस्तकों हेतु जहाज मंदिर कार्यालय पर सम्पर्क करें। 02973-256107, M- 0964 964 0451

भोपालगढ दादावाडी की प्रथम वर्षगांठ सम्पन्न

चतुर्थ दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि की दीक्षा स्थली भोपालगढ की दादावाडी की प्रतिष्ठा की पहली वर्षगांठ ता. 30 अप्रेल को अत्यन्त आनंद के साथ मनाई गई।

इस दादावाडी का संपूर्ण जीर्णोद्धार श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी द्वारा कराया गया है।

इस दादावाडी में श्री सीमंधर स्वामी जिनमंदिर एवं जिनचन्द्रसूरि दादा गुरुदेव की प्रतिष्ठा गतवर्ष पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की निश्रा में संपन्न हुई थी।

श्री सीमंधर स्वामी परमात्मा की ध्वजा लाभार्थी श्री ज्ञानचंदजी मनीषकुमारजी मुणोत परिवार द्वारा एवं दादावाडी की ध्वजा लाभार्थी श्री दलीचंदजी वगतावरमलजी कांकरिया परिवार द्वारा चढाई गई। इस अवसर पर अठारह अभिषेक किये गये एवं सतरह भेदी पूजा पढाई गई।

28
संस्मरण

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

ऐसे थे मेरे गुरूदेव

पूज्य गुरुदेवश्री पालीताना में बिराजमान थे। वे मद्रास, बैंगलोर, मैसूर, हैदराबाद आदि क्षेत्रों में शासन प्रभावना करते हुए पालीताना पहुँचे थे।

पूज्यश्री के परम भक्त उदयपुर निवासी श्री मनोहरलालजी चतुर संघ लेकर पालीताना पधारने वाले थे। श्री चतुर सा. की भावना वर्षों से थी कि एक संघ लेकर यात्रियों को सिद्धाचलजी के दर्शन कराऊँ!

वे पूज्यश्री की प्रतीक्षा कर रहे थे। पूज्यश्री पालीताना पहुँचे और उसी समय संघ का आयोजन हो।

श्री मनोहरलालजी चतुर कांग्रेस के नेता थे। जिस समय श्री चतुरसा. शहर कांग्रेस के अध्यक्ष थे, उस समय श्री मोहनलालजी सुखाडिया शहर कांग्रेस के मंत्री थे। चतुरजी के प्रति सुखाडियाजी का अनन्य प्रेम व आत्मीयता थी।

संघ के आयोजन के समय सुखाडियाजी राजस्थान के मुख्यमंत्री थे। जब चतुरजी ने संघ का आयोजन किया तो उन्होंने सुखाडियाजी को आमंत्रण भेजा कि आपको संघ में पधारना है।

एक दिवसीय कार्यक्रम में सुबह गिरिराज की यात्रा, दोपहर को धर्म चर्चा और रात्रि में सार्वजनिक अभिनंदन समारोह निश्चित किया था।

श्री सुखाडियाजी के साथ कई मंत्री व अन्य नेतागण थे। प्राय: सभी के लिये डोलियों की व्यवस्था की थी। पर सुखाडियाजी ने पूज्यश्री से मांगलिक सुनकर जब प्रस्थान किया तो निश्चय किया कि ऐसे महान् तीर्थ की यात्रा पैदल ही करूँगा। जब सुखाडियाजी पैदल चढने लगे, तो शेष अन्य नेताओं ने भी डोली के उपयोग का विचार छोड दिया। पूरा काफिला पैदल चढने लगा। सभी थक कर चूर हो गये।

जब यात्रा कर नीचे आये तो गुरुदेवश्री से सुखाडियाजी ने कहा- गुरुदेव! हम आज तो पूरे थक गये। बडी मुश्किल से दादा के दरबार में पहुँचे। पर ज्योंहि दादा के दरबार में पहुँच कर परमात्मा के दर्शन किये, हमारी सारी थकान गायब हो गई। अभी हम तरोताजा महसूस कर रहे हैं।

गुरुदेवश्री ने कहा- सुखाडियाजी! आपकी केवल आज की थकान दूर नहीं हुई... केवल एक जन्म की थकान दूर नहीं हुई.. बल्कि परमात्मा के भाव-पूरित दर्शन से आपके जन्मों जन्मों की थकान दूर हो गई है।

पूज्यश्री के वचनों को श्रवण कर सुखाडियाजी अत्यन्त प्रभावित हुए थे। पालीताना का वह पहला परिचय लम्बे समय तक चला। प्राय: श्री सुखाडियाजी का आगमन गुरुदेवश्री के दर्शन करने हेतु होता रहता था।

नेत्र शिविर लगाया

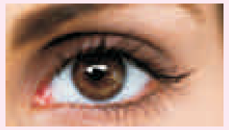

चेन्नई। महावीर इंटरनेशनल चेन्नई मेट्रो द्वारा हाल ही शांतिप्रभा रंगरूपमलजी लोढ़ा के सहयोग से 636 वां नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर लगाया गया। मईलापुर में लगाए गए इस शिविर में उदी आई अस्पताल के चिकित्सकों ने सेवाएं देते हुए 104 जनों की आंखों की जांच की। इनमें से 6 जनों की आंखों में मोतियाबिंद पाया गया जिनकी सर्जरी करवाई गई। संस्था सचिव ज्ञानचंद कोठारी ने बताया कि जांच में 54 लोगों की आंखे कमजोर पाई गई जिनको चश्मे बनाकर दिए जाएंगे। शिविर में आई कैम्प को-ऑडिनेटर प्रकाश लोढ़ा व भंवरलाल जैन का सहयोग रहा।

पूज्यश्री का कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. ने आगोलाई प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् बालेसर पधारे। वहाँ से विहार कर आगोलाई होते हुए ता. 19 अप्रेल को जोधपुर पधारे। त्रिदिवसीय प्रवास के पश्चात् 21 अप्रेल को शाम को विहार कर ता. 23 अप्रेल को भोपालगढ पधारे। वहाँ से 24 को शाम को विहार कर पीपाडसिटी होते हुए ता. 26 अप्रेल को बिलाडा पधारे।

बिलाडा में ता. 26 को श्री रतनलालजी व्यापारीलालजी बोहरा हाला वालों का यात्रा संघ पहुँचा। पूज्यश्री का प्रवचन हुआ। वहाँ से 26 शाम को विहार कर रायपुर, बगडी, सोजत रोड, मारवाड जंक्शन, भिमालिया, सोमेसर होते हुए ता. 2 मई को डुठारिया में प्रवेश किया।

वहाँ ता. 11 मई को अंजनशलाका प्रतिष्ठा करवाकर उदयपुर, केशरियाजी होते हुए मई के चतुर्थ सप्ताह के प्रारंभ में अहमदाबाद पधारेंगे।

संपर्क सूत्र-

पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.
द्वारा बाबुलाल लूणिया C/o महावीर ट्रेडिंग कम्पनी
5, श्रेयास इन्ड. एस्टेट, सोनारिया ब्लॉक के सामने, जनरल हॉस्पिटल रोड़,
बापु नगर, अहमदाबाद-380021 (गुज.)
संपर्क - 098251 05823, 097843 26130 (मुकेश)

मधुर संस्मरण

साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

मेरे बारे में मेरी अनुभूति

पूर्ण जागररूकता... प्रतिपल की सावधानी संयम की प्रथम शर्त है। जिस प्रकार एक पल की ड्राईवर की असावधानी बहुत बड़ी दुर्घटना की जननी हो सकती है, वैसे ही साधक का पलभर का प्रमाद उसकी चेतना के लिये घातक हो जाता है।

हम यह न समझें कि एक पल का कोई मोल नहीं होता है। बहुत बार हम दूसरों से सुनते हैं कि अगर कुछ सेकण्ड निकल जाते तो यह दुर्घटना नहीं होती।

वाकई में ज्ञानी महापुरुषों का यह कथन कितना सच है कि पल भर का भरोसा नहीं और योजनाओं का अन्त नहीं।

काश! मानव वर्तमान में जीना सीख पाता। मैं अन्यों की क्या कहुं?क्या मैं स्वयं संयमी जीवन के चार दशक पूरे करने के बावजूद वर्तमान में जीना सीख पायी हूँ!

आयुष्य तो हर बीतते क्षण के साथ कम होता जा रहा है। आचारांग में स्पष्ट लिखा है कि ''सर्वगुणेषु आयुष्कस्यैव प्रधानत्वात्'' समस्त गुणों के प्रकट होने की संभावना जीवन के साथ ही जुड़ी हुई है। जीवन रहते जितने ज्यादा सद्गुणों का उद्घाटन हो, उतना ही ज्यादा लाभ है।

मैं प्रतिदिन अनेक व्यक्तियों से मिलती हूँ। नि:संदेह हर व्यक्ति में कुछ न कुछ विशिष्टता है। यद्यपि मैं चाहती हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति की विशिष्टता अंकित करूं ताकि संभव है गुणों की व्याख्या करते-करते मैं स्वयं गुणी बन सकूं पर अंकन संभव नहीं है। कुछ तो इतने अधिक दुर्लभ व्यक्तित्व के धनी होते हैं कि उनका अंकन मेरे लिये ही नहीं अन्य लोगों के लिये भी पठनीय, मननीय एवं अनुकरणीय हो सकता है।

1997 में मेरा चातुर्मास सिवाना में मेरे परमाराध्य दादा गुरु श्री जिनकुशलसूरि की जन्मभूमि में था। दीपावली की छुट्टियों में बच्चों का शिविर लगाने की योजना बनी। शिविर संचालन हेतु शिविर विशेषज्ञ प्राणीमित्र श्री कुमारपाल भाई वि. शाह को निवेदन किया गया।

शिविर उनका पसंदीदा विषय है। उन्होंने स्वीकृति दे दी। मेरा शिविर का विशेष अनुभव न था। मैं शिविर के प्रति इतनी उत्सुक भी नहीं थी। मेरी उत्सुकता शिविर से ज्यादा कुमारपाल भाई के प्रति थी। जैन जगत में कुमारपाल भाई का नाम विशिष्ट था। उनकी साधना और जिनशासन के प्रति समर्पण को अत्यंत सम्मान के साथ देखा जाता था। उनके विशिष्ट व्यक्तित्व को निकटता से देखने की रूचि के कारण ही संभवत: शिविर के आयोजन की कल्पना जगी थी।

शिविर प्रारम्भ होने से एक दिन पूर्व मैं दोपहर में मीठोडावास धर्मशाला के हॉल में किसी स्वाध्याय की पुस्तक को पढ़ रही थी। अचानक सफेद झक कुर्ते पाजामे में सज्ज श्री कुमारपालभाई का पदार्पण हुआ। मैंने अभी तक उन्हें मात्र एक बार धोलका दादावाड़ी में वर्षों पूर्व देखा था। उनसे उस समय मेरा संवाद नहीं हुआ था अत: उनकी तस्वीर मेरे मानस पटल पर इतनी दृढ़ता से अंकित नहीं हुई थी। मेरी आँखों में परिचय जानने की जिज्ञासा तैर गयी। वे मेरी उत्सुकता समझ गये। तुरंत बोले- कुमारपाल।

मैं नाम सुनकर आनंद से भर उठी। उनका विवेक... उनकी सादगी... उनका पवित्र आभा मंडल... उनकी आँखों से टपकती प्रेम की परिपूर्णता... सब कुछ अनूठा और अद्भुत था। मैं उनके व्यक्तित्व वैभव में कुछ पल के लिये खो गयी।

मेरी आँखों में छलकते अहोभाव को देखकर वे भी शायद समझ गये। उन्होंने वातावरण की निस्तब्धता को तोड़ते हुए कहा- शिविर की क्या व्यवस्था है?

मैं जैसे वर्तमान में लौटी। तब तक धर्मशाला के बाहर खड़ी उनकी गाड़ी को देखकर संघ के कुछ प्रतिनिधि भी आ गये थे।

उस समय वे सिवाना पांच दिन रूके थे। नाकोड़ा ज्ञानशाला के बालकों के साथ प्राध्यापक श्री नरेन्द्रभाई भी पधार गये थे। सिवाना संघ, स्थानीय शिविरार्थी, ज्ञानशाला के समस्त विद्यार्थी एवं वहाँ के अध्यापक, श्री कुमारपाल भाई का सान्निध्य पाकर अत्यंत तृप्त थे।

शिविर के छात्र तो लगभग छोटी उम्र के होने से कुमारपालभाई के स्तर के न थे अत: उनका अधिकांश समय मेरे साथ या ज्ञानशाला के कुलपति श्री नरेन्द्रभाई के साथ बीतता था।

उनके संवेदनशील व्यवहार की मैं जैसे कायल हो गयी। कोमलता, करूणा और तीक्ष्णता ये विरोधी तत्व परमात्मा के स्तवन में श्रीमद् देवचंद्र द्वारा वर्णित है पर किसी व्यक्ति विशेष में इनकी जीवंत अभिव्यक्ति कितना कठिन कार्य है। कठोर-कठोर हो सकता है, उसमें कोमलता, करूणा एवं प्रेम की उपस्थिति कहाँ संभव है?अगर कोई कोमल है तो कोमल होगा उसमें कठोर तत्त्व कैसे पाया जायेगा?

व्यवहार में हम प्रतिदिन ऐसे तो अनेक व्यक्ति देखते हैं, जो कठोर भी होते हैं और कोमल भी होते हैं। कठोर दूसरों के लिये व कोमल अपने लिये।

मेरे मस्तिष्क में एक बहुत पुराना संस्मरण जीवंत हो रहा है। हम विहार करते हुए शाम के समय एक गांव में पहुंचे थे। मंदिर आदि के दर्शन करके उपाश्रय में पहुंचे। चूंकि जेठ का महिना था अत: गर्मी पूरे यौवन पर थी। उपाश्रय मौसम के प्रतिकूल था। प्राचीन व्यवस्था से बना था। हमने गाँव के बाहर विद्यालय में प्रवास का निर्णय लिया।

ज्यों-ज्यों रात गहराने लगी, वहाँ मच्छरों ने क्रमश: शाता पूछने का सामूहिक कार्यक्रम ही जैसे बना डाला। ऐसा लगा- शायद आज उनके लिये कोई स्वामिवात्सल्य का आयोजन रखा गया था।

पूरी रात कोई सो नहीं पाया। दूसरे दिन जब सहज ही बातचीत करते हुए छोटे साध्वीजी के द्वारा जब यह कहा गया कि आज रात खूब तकलीफ पड़ी। तपाक से श्रावक बोला- आपने तकलीफ उठाने के लिये ही तो दीक्षा ली है।

श्रावक ने बिना कुछ चिंतन किये प्रतिक्रिया करने के लिये प्रतिक्रिया कर दी। यद्यपि अधिकांश स्थलों पर यही होता है। व्यक्ति जिसके बारे में प्रतिक्रिया दे रहा है, उसके संदर्भ में संभवत: अब भी नहीं जानता पर अपनी उपस्थिति अंकित तो करानी है।

कितना अच्छा हो, हम वह बोले जो हमारी गरिमा की अभिवृद्धि करे। हमारे अनुशासन को स्वीकार हो।

श्री कुमारपाल भाई अत्यंत कठोर है पर अन्यों के प्रति नहीं। वे कठोर हैं स्वयं के प्रति। अपने स्वीकृत नियमों में एक प्रतिशत भी समझौता उन्हें पसंद नहीं है। नियमपालन में सहज न्यूनता की कहीं आशंका भी नजर आ जाय तो वे उस स्थान का त्याग करने में पलभर का भी विलंब नहीं करते। और जहाँ उन्हें लगता है कि इस स्थान पर उनकी विरक्ति की आंच और अधिक निखरेगी, वहाँ हजार असुविधा सहकर भी रूक जायेंगे।

सौम्य व्यक्तित्व के धनी श्री कुमारपाल भाई से जब इस त्यागप्रधान व्यक्तित्व के बीजवपन कहाँ, कब और कैसे हुए, जानना चाहा तो उन्होंने तुरंत कहा- इसका निमित्त है शिविर।

सोलह वर्ष की युवा अवस्था... आराधना का पहला

अनुभव...। हम अपने सहपाठियों के साथ गुरुदेव की निश्रा में अनुशासन के साथ अलग-अलग विषय के अध्ययन में तल्लीन थे कि अचानक एक दिन भयंकर तूफान आ गया। टीन से बनी छत उड़ गयी। हवा इतनी तेज आवाज में सांय-सांय कर रही थी कि भय के मारे कलेजा मुंह को आ गया। दिन में भी भयानक अंधेरा छा गया। कुछ क्षणों के लिये तो लगा जैसे आज जीवन का अंतिम दिन आ गया है। आज की यह आंधी अनेक निर्दोष जिंदगियों को अपना भक्ष्य बना देगी।

मौत की कल्पना ने रोम-रोम में एक सिहरन पैदा कर दी। पर अचानक एक कल्पना ने जीवन की दिशा ही बदल दी। मैंने मौत की कल्पना में जीवन की बाजी जीतने के उद्देश्य से प्रतिज्ञा ली- अगर आज मैं बच गया तो अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करूंगा।

अचानक जैसे तुफान थम गया। आज तो उस दृश्य की जब कल्पना करता हूं तो लगता है शायद मेरे पूर्वजन्म के किसी मित्र ने मेरे जीवन को आराधनामय बनाने के लिये मेरे सामने मौत खड़ी की थी। अगर वह निमित्त न मिलता तो मेरे जीवन में आराधना की यह भूमिका उठती या नहीं, मैं नहीं कह सकता।

मैंने तत्काल गुरुदेव आचार्य विजयभुवनभानुसूरि के चरणों में उपस्थित होकर अपनी प्रतिज्ञा बतायी। गुरुदेव सुनकर अचंभित हो गये। उन्होंने कुछ क्षण मेरी आँखों में झांका, मुझे महसूस हुआ- गुरुदेव की आँखों से एक तेजपुंज निकलकर मेरे चारों और रक्षाकवच के रूप में स्थापित हो गया है। मैं रोमांच से भर उठा। अनूठा और अद्भुत था वह अनुभव।

क्रमशः

पादरू में दादावाडी की वर्षगांठ

बाडमेर जिले के पादरू नगर में श्री शीतलनाथ जिन मंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी की प्रतिष्ठा की 26 वीं वर्षगांठ ता. 8 जून को त्रिदिवसीय कार्यक्रम के साथ मनाई जायेगी।

26 वर्ष पूर्व इस जिनमंदिर दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न हुई थी। ता. 6 जून को अठारह अभिषेक के साथ पंचकल्याणक पूजा पढाई जायेगी।

ता. 7 जून को भैरव पूजन पढाया जायेगा। साथ ही समिति की बैठक में प्रगति रिपोर्ट पर विचार विमर्श किया जायेगा। आम सभा का आयोजन भी होगा। तथा रात्रि में भक्ति के दौरान अष्टप्रकारी पूजा के वार्षिक चढावे बोले जायेंगे।

ता. 8 जून को सतरह भेदी पूजा के साथ ध्वजा चढाई जायेगी। जिनमंदिर की ध्वजा लाभार्थी शा. रूपचंदजी घेवरचंदजी वंसराजजी संकलेचा परिवार, दादावाडी की ध्वजा शा. सांवलचंदजी हरकचंदजी संकलेचा परिवार द्वारा चढाई जायेगी। दोपहर में दादा गुरुदेव की पूजा पढाई जायेगी। तीनों दिन स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया जायेगा।

पंचांग

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

JUNE 2014

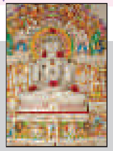

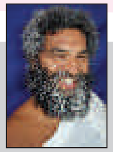

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1 ज्येष्ठ सुदि 4	2 ज्येष्ठ सुदि 4	3 ज्येष्ठ सुदि 5	4 ज्येष्ठ सुदि 6	5 ज्येष्ठ सुदि 7	6 ज्येष्ठ सुदि 8	7 ज्येष्ठ सुदि 9
8 ज्येष्ठ सुदि 10	9 ज्येष्ठ सुदि 11	10 ज्येष्ठ सुदि 12	11 ज्येष्ठ सुदि 13	12 ज्येष्ठ सुदि 14	13 ज्येष्ठ सुदि 15	14 आषाढ़ वदि 1/2
15 आषाढ़ वदि 3	16 आषाढ़ वदि 4	17 आषाढ़ वदि 5	18 आषाढ़ वदि 6	19 आषाढ़ वदि 7	20 आषाढ़ वदि 8	21 आषाढ़ वदि 9
22 आषाढ़ वदि 10	23 आषाढ़ वदि 11	24 आषाढ़ वदि 12	25 आषाढ़ वदि 13	26 आषाढ़ वदि 14	27 आषाढ़ वदि 30	28 आषाढ़ सुदि 1
29 आषाढ़ सुदि 2	30 आषाढ़ सुदि 3					

पर्व दिवस

ज्येष्ठ सुदि 4 की वृद्धि,
12.6.14 पाक्षिक प्रतिक्रमण,
25.6.14 रोहिणी,

आषाढ वदि 2 का क्षय
22.6.14 प्रात: 10.40 बजे आम-त्याग
26.6.14 पाक्षिक प्रतिक्रमण

श्री धर्मनाथ मोक्ष कल्याणक	ज्येष्ठ सुदि 5	श्री जिनहर्ष सूरि आचार्य पदारोहण	ज्येष्ठ सुदि 15-1856
श्री जिनलाभसूरि आचार्य पद	ज्येष्ठ सुदि 5-1804	श्री जिनलब्धिसूरि आचार्य पद	आषाढ वदि 1-1400
श्री जिनपद्मसूरि आचार्य पद	ज्येष्ठ सुदि 6-1390	उपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी दीक्षा	आषाढ वदि 2-1816
श्री जिनलाभसूरि दीक्षा	ज्येष्ठ सुदि 6-1796	श्री आदिनाथ च्यवन कल्याणक	आषाढ वदि 4
श्री त्रैलोक्यसागरजी दीक्षा	ज्येष्ठ सुदि 7-1952	श्री जिनहरिसागरसूरि दीक्षा	आषाढ वदि 5-1957
श्री वासुपूज्यस्वामी च्यवन कल्याणक	ज्येष्ठ सुदि 9	श्री जिनउदयसागरसूरि एवं श्री जिनकान्ति सागरसूरि आचार्य पद	आषाढ वदि 6-2038
श्री सुपार्श्वनाथ जन्म कल्याणक	ज्येष्ठ सुदि 12	श्री विमलनाथ मोक्ष कल्याणक	आषाढ वदि 7
श्री सुपार्श्वनाथ दीक्षा कल्याणक	ज्येष्ठ सुदि 13	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी दीक्षा दिवस	आषाढ वदि 7-2030
श्री जिनकान्तिसागर सूरि दीक्षा	ज्येष्ठ सुदि 13-1989	श्री नमिनाथ च्यवन कल्याणक	आषाढ वदि 9

समाचार दर्शन

आगोलाई का प्रतिष्ठा महोत्सव

भव्य शणगार युक्त परमात्मा
दादागुरुदेव की प्रतिमा

आगोलाई की प्रतिष्ठा संपन्न

परम पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा एवं पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म.सा. की पावन सानिध्यता में जोधपुर जिले के आगोलाई गांव में मूलनायक श्री वासुपूज्य परमात्मा के मंदिर की प्रतिष्ठा ता. 16 अप्रेल 2014 वैशाख वदि 1 को शुभ मुहूर्त्त में अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ संपन्न हुई।

प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रारंभ 12 अप्रेल को पूज्य गुरु भगवंतों के मंगल प्रवेश के साथ हुआ। ता. 13 अप्रेल को परमात्मा महावीर का जन्म कल्याणक मनाया गया। प्रभात फेरी, गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। पूज्य उपाध्यायश्री एवं पूजनीया बहिन म. के प्रभावक प्रवचन हुए। दोपहर में कुंभ स्थापना, दीपस्थापना जवारारोपण आदि के बाद परमात्मा महावीर षट् कल्याणक पूजा पढाई गई।

ता. 15 अप्रेल को भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। शोभायात्रा में बालेसर, कोरना, सेतरावा, जोधपुर, फलोदी, बाडमेर, बालोतरा आदि आसपास के क्षेत्रों के श्रद्धालु बडी संख्या में सम्मिलित हुए। वरघोडे के बाद प्रतिष्ठा संबंधी ध्वजा, स्वर्णकलश, बिराजमान आदि के चढावे बोले गये। प्रतिष्ठा के चढावे आशा के कई गुणा अधिक हुए।

ता. 16 अप्रेल को प्रतिष्ठा का मंगल उल्लास अद्भुत था। प्रतिष्ठा के समय जैसे कोई चमत्कार हुआ- कडी धूप के मध्य अचानक बादल छा गये। बादलों का छत्र पाकर समस्त श्रद्धालु लोग जय जयकार करने लगे।

पावनकारी निश्रा

पावनकारी सान्निध्य

परमात्मा का वरघोड़ा

समारोह में आगोलाई निवासी एवं प्रवासी बडी संख्या में उपस्थित रहे। छत्तीसगढ, जोधपुर, बालोतरा, पाली, जलगांव आदि क्षेत्रों से अपने गांव में हो रही प्रतिष्ठा में भाग लेने के लिये पधारे। ता. 17 अप्रेल को द्वारोद्घाटन किया गया।

आगोलाई गांव का इतिहास

जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में स्थित भारत देश के राजस्थान राज्य के पश्चिम किनारे पर मारवाड प्रदेश के जोधपुर जिले में जोधपुर-जैसलमेर मुख्य मार्ग पर जोधपुर से 45 कि.मी. पर आगोलाई गांव स्थित है।

आगालोई ग्राम प्राचीन काल से समृद्धि और सांस्कृतिक वैभव से परिपूर्ण रहा है। इतिहास और परापूर्व परम्परा से चली आ रही कथाऐं यह सिद्ध करती है कि आगोलाई ग्राम की बसावट एक हजार वर्ष से भी अधिक पुरानी है।

लगभग 800 वर्ष पहले यहाँ जिन मंदिर का निर्माण हुआ। 200 से अधिक वर्ष पूर्व आचार्य श्री जिन हर्ष सूरीश्वरजी म.सा. के कर कमलों से यहाँ श्री जिनदत्तसूरि एवं श्री जिनकुशलसूरि के चरण युगल स्थापित कर दादावाडी का निर्माण श्री संघ द्वारा कराया गया।

खरतरगच्छ बृहद् गुर्वावली के अनुसार पूज्य आचार्य श्री जिनभक्तिसूरि की पावन निश्रा में वि. सं. 1793 में यहाँ सौभाग्य नंदी की रचना करते हुए मुनि दीक्षाऐं संपन्न हुई थी। इतिहास के अनुसार आगोलाई खरतरगच्छ का प्रभावशाली केन्द्र रहा है।

गजराज सवारी

उत्साहित जनसमुह

पधारो अम आंगणिये

गुरुदेवजी को कामली अर्पण

आगोलाई का प्रतिष्ठा महोत्सव

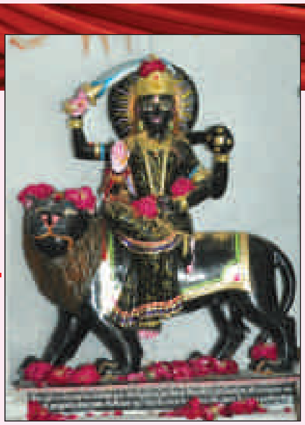

भव्य शणगार युक्त देव-देवी की प्रतिमा

जैसलमेर यात्रा का मुख्य मार्ग होने से यहाँ साधु संतों का निरन्तर आवागमन रहा है।

यहाँ के उपासरे में श्री भैरवजी बिराजमान है, जो हाजरा हजूर है। इन भैरव देव की प्रतिष्ठा पूज्य खरतरगच्छ के कोहिनूर उन्हीं आचार्य भगवंत श्री जिन कीर्तिरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के करकमलों द्वारा हुई, जिन्होंने नाकोडाजी में भैरवजी की प्रतिष्ठा की थी। यहाँ के भैरव देव बडे ही चमत्कारी है।

यहाँ जैन मंदिर, दादावाडी, उपासरे में भैरव मंदिर व स्थानक के अलावा ठाकुरजी का प्राचीन मंदिर है। साथ ही श्री सेनजी महाराज, हनुमानजी व राणी भटियाणीजी का मंदिर भी विख्यात है जहाँ लगातार भक्तों का आवागमन बना रहता है।

एक समय यहाँ ओसवाल समाज के 200 से भी अधिक परिवार निवास करते थे। बडा हाट था। दुकानों के खण्डहर आज भी अपने प्राचीन वैभव की कथा सुनाते हैं।

आगोलाई के निवासी भारत के विभिन्न प्रान्तों में फैले हुए हैं। अधिकतर परिवार राजस्थान के जोधपुर, पाली, बालोतरा, जसोल, छत्तीसगढ, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश आदि प्रान्तों व शहरों में बसे हुए हैं। यहाँ खरतरगच्छ परम्परा की गादी थी, जहाँ प्रभावशाली यति बिराजते थे। उनमें गुरांसा तगतमलजी व हजारीमलजी बडे ही चमत्कारी यति थे। उनकी स्मृति में श्री संघ द्वारा बस स्टेण्ड पर धर्मशाला व प्याउ का निर्माण करवाया गया हैं।

जिन मंदिर जीर्णोद्धार

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य रत्न एवं पूज्य महातपस्वी मुनिराज श्री प्रतापसागरजी म.सा. के कृपापात्र पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनि भगवंत श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. का लगभग 15 से 20 वर्ष पूर्व हमारे गांव में पदार्पण हुआ। उन्होंने जिन मंदिर की जीर्ण दशा देखकर श्री संघ को एकत्र कर प्रेरणा दी कि आपके पूर्वजों द्वारा निर्मित इस प्राचीन जिन मंदिर का जीर्णोद्धार होना चाहिये।

इस मंदिर का निर्माण लगभग 800 वर्ष पूर्व हुआ था। मंदिरजी के मूलनायक वासुपूज्य परमात्मा थे। जिनकी प्राचीन प्रतिमा कारणवश जोधपुर म्युझियम में चली गई। यह प्रतिमा यहाँ से कब गई, क्यों गई, कोई नहीं जानता।

जीर्णोद्धार तो हमारे संघ को कराना ही था। कितने ही वर्षों से हमारा संघ प्रयत्नशील भी था। पर कोई न कोई बाधा आ जाती थी।

अब पूज्यश्री की प्रेरणा प्राप्त कर हमारे श्री संघ ने सर्वसम्मति से पूज्यश्री के मार्गदर्शन में इस मंदिर का सांगोपांग जीर्णोद्धार कराने का निश्चय किया। पर कार्य आगे नहीं बढ पाया। तब पूज्य मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. के आदेश से हमारा संघ पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के वर्षीतप के पारणे के अवसर पर पालीताना पहुँचा। वहाँ उनका मार्गदर्शन मिला। यह उनके मार्गदर्शन का ही परिणाम है कि कार्य सुचारू रूप से चला व संपन्न हुआ।

जीर्णोद्धार-कृत इस जिन मंदिर की शोभा देखते ही बनती है। गांव की शोभा में चार चांद लग गये हैं। जिन मंदिर की भव्यता निहार कर पूरा गांव आनंदित हो रहा है।

तोरणिया बंधावो

रंगे रमे, आनंदे रमे

गुरुवर्याजी को कामली अर्पण

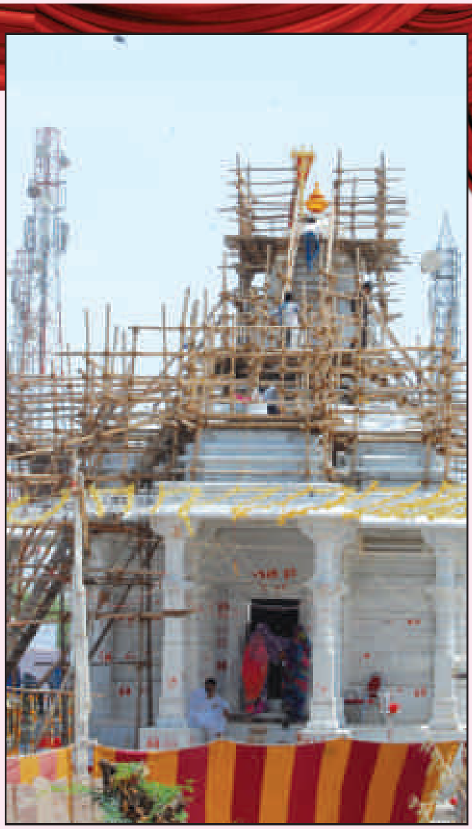

फलेचुंदडी लाभार्थी गोगड परिवार का श्रीसंघ द्वारा बहुमान

प्रतिष्ठा को निरखता अपार जनसमूह

पूज्यश्री द्वारा मंत्रोच्चारण

कलश स्थापना गोगड परिवार द्वारा

प्रतिष्ठा लाभार्थी

ध्वजा- शा. भीकमचंदजी पृथ्वीराजजी अमृतलालजी पारसमलजी गुलेच्छा मूल आगोलाई हाल जोधपुर

मुख्य स्वर्ण कलश- शा. गौतमचंदजी छोटमलजी सोहनचंदजी प्रकाशचंदजी लालचंदजी रेखचंदजी विमलचंदजी भोपालचंदजी चेनकरणजी लालचंदजी गोगड, निवासी आगोलाई हाल- पाली, जयपुर, हुबली

मूलनायक वासुपूज्य बिराजमान- शा. मिश्रीमलजी भोमराजजी प्रेमराजजी मनसुखलालजी नवरत्नजी पंकजकुमारजी बेटा पोता धींगडमलजी संचेती, कोनरा हाल- जोधपुर

आदिनाथ बिराजमान- शा. भंवरलालजी नेमीचंदजी देवराजजी झूमरलालजी गोगड, आगोलाई-जोधपुर

मुनिसुव्रत बिराजमान- शा. लीलमचंदजी मीठालालजी किरोडीमलजी शेखरचंदजी गोगड आगोलाई- जोधपुर

पार्श्वनाथ बिराजमान- शा. कमलेशचंदजी प्रकाशचंदजी पारसमलजी कोठारी मजल- ईरोड

महावीर स्वामी- शा. मांगीलालजी मूलचंदजी प्रकाशचंदजी जीरावला समदडी-जोधपुर

दादा जिनकुशलसूरि- शा. भंवरलालजी लाभचंदजी मोतीलालजी प्रेमचंदजी गजेन्द्रकुमारजी अशोककुमारजी दौलतकुमारजी राजेन्द्र महेन्द्र सांखला, बालेसर

गगने लहराये प्रभु की पताका

प्रतिष्ठा की हाजिरी लगाता सकल संघ

प्रभु प्रार्थना

बहुमान गोगड परिवार का

नाकोडा भैरव- शा. देवराजजी पृथ्वीराजजी संतोषकुमारजी रमेश महावीर विनोद कोठारी बागावास-सूरत

पद्मावती देवी- शा. पारसमलजी मदनलालजी गौतमचंदजी भंवरलालजी केवलचंदजी संचेती कोनरा- शिमोगा

सच्चिया देवी- शा. खेमराजजी पारसमलजी लालचंदजी भंवरलालजी मीठालालजी सोहनलालजी मनसुखलालजी अशोककुमार महावीरचंद शांतिलाल विनोद पदम गोगड, आगोलाई जोधपुर गंगावती

गुरुपूजन एवं कामली- शा. राणीदानजी जसराजजी मोतीलालजी लोढा, सेतरावा

तोरण- शा. मांगीलालजी पारसमलजी मदनलालजी सोहनलालजी रमेशकुमारजी सुमेरमलजी पदम पारस लूणी जंक्शन हॉस्पेट

भोपालजी गोगड द्वारा जवारारोपण

केशर थापा कुमारिकाओं द्वारा

श्रीसंघ का उल्लास गोगड परिवार के साथ

आगोलाई का हरा-भरा आंगण...

नवसारी में चातुर्मास

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक, वशीमालाणी रत्न शिरोमणि, बकेला तीर्थोद्धारक मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म.सा. ठाणा 2 का आगामी चातुर्मास गुजरात के नवसारी शहर में निश्चित किया गया है। बाडमेर जैन श्री संघ, नवसारी की भावभरी विनंती स्वीकार कर चौमासे की जय बुलाई गई। उनकी पावन निश्रा में छत्तीसगढ के महासमुन्द से श्री सम्मेतशिखरजी के लिये छह री पालित संघ का ऐतिहासिक आयोजन हुआ था। जिसमें पूज्यश्री के साथ श्रमण संघ के वरिष्ठ संत पूज्य मुनिराज श्री रतनमुनिजी म.सा. भी अपने शिष्य मंडल एवं सतीवृन्द के साथ सम्मिलित हुए थे। तत्पश्चात् कल्याणक भूमियों के पावन दर्शन स्पर्शन करते हुए पुनः छत्तीसगढ पधारे। अभी वे छत्तीसगढ बिराज रहे हैं। वहाँ से गुजरात की ओर विहार करेंगे।

बड़ौदा में स्वाध्याय मण्डल की स्थापना

पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनिप्रवर श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से श्री जिनकुशलकान्ति स्वाध्याय मण्डल की स्थापना की गयी। 10.4.2014 को पूज्य मुनिश्री ने स्वाध्याय की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा- ज्ञान स्वाध्याय के निरन्तरता से प्राप्त होता है। ज्ञान से दर्शन शुद्धि एवं चारित्र की विशुद्धि होती है। जैसे सूर्योदय के साथ अंधकार दूर हो जाता है वैसे ही सम्यग्ज्ञान की रश्मियों के प्रकट होते ही मिथ्यात्व एवं बुराईयों का तमस गायब हो जाता है।

नवपद के चतुर्थ दिवस उपाध्याय पद की महत्ता बताते हुए कहा कि उपाध्याय ज्ञान प्रदान करते है। जो ज्ञान चारित्र में परिणत हो, वह ज्ञान मुक्ति प्रदायक होता है।

इस मण्डल के कार्य की सारी जिम्मेदारी नरेशजी पारख और अल्पेश झाबक पर डाली गयी। प्रति रविवार को पुरुष वर्ग इतिहास, तत्त्वज्ञान, प्रतिक्रमण आदि के द्वारा निजात्म शुद्धि का यत्न करे, यही इस मण्डल की स्थापना का उद्देश्य है।

श्रद्धांजली

पूजनीया प्रवर्तिनी श्री चन्द्रप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री जीतयशाश्रीजी म.सा. का जोधपुर संबोधि धाम में ता. को स्वर्गवास हो गया। आप 83 वर्ष के थे। आपकी भागवती दीक्षा वि. सं. 2035 ज्येष्ठ सुदि 11 को हुई थी। आपके साथ पति पूज्य मुनि श्री महिमाप्रभसागरजी म.सा. एवं पूज्य मुनि श्री ललितप्रभसागरजी म.सा. की दीक्षा भी संपन्न हुई थी। कुछ समय के पश्चात् आपके पुत्र पूज्य मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी म.सा. ने भी संयम ग्रहण कर लिया था। जहाज मंदिर परिवार की ओर से सादर श्रद्धांजली समर्पित है।

पूजनीया प्रवर्तिनी श्री निपुणाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री नयप्रज्ञाश्रीजी म.सा. का कैवल्यधाम में ता. 27 अप्रेल को स्वर्गवास हो गया। आपका जन्म कवर्धा में हुआ था। आपको केन्सर की व्याधि होने पर भी आपका समता भाव अनुमोदनीय था। जहाज मंदिर परिवार की ओर से सादर श्रद्धांजली समर्पित है।

वीर जन्मोत्सव में उमड़ा जन सैलाब

बाडमेर में जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के 2613 वा जन्म कल्याणक महोत्सव अत्यन्त उल्लास के साथ मनाया गया। पू. मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. के मंगलाचरण से शोभायात्रा का प्रारंभ हुआ।

जैन न्याति नोहरे पर ध्वजारोहण का लाभ बाड़मेर विधायक मेवाराम चिन्तामणदास जैन परिवार ने लिया। शोभायात्रा में रथ में भगवान को साथ में लेकर चलने का लाभ आसूलाल कल्याणदास श्रीश्रीमाल परिवार ने लिया। पू. मुनिराज मुक्तिप्रभसागरजी म. एवं पू. मनीषप्रभसागरजी म. के साथ पुरूष एवं युवा वर्ग ने महावीर स्वामी के जयकारों के साथ शहर को महावीरमय बनाया। बाद में साध्वी श्री सुरंजनाश्रीजी म. आदि के साथ महिलायें मंगलगीत गाती चल रही थी। बाद में विभिन्न प्रकार की मनमोहक झांकिया प्रस्तुत की गई।

मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. ने कहा कि श्रमण भगवान महावीरस्वामी जन्म के समय तीन ज्ञान के स्वामी थे। संसार में रहते हुए संसार विरक्त रहते थे। महावीर ने यह उपदेश दिया कि कर्मों को तो स्वयं भुगतना पड़ता है। आवश्यकता है हमें महावीरस्वामी के सिद्धान्तों को अपनाने की। हम प्रभु की रोज पूजा करते है व आदेश की पालना नहीं करते है। जैन वही है जिनके रोम रोम करूणा के भाव है।

फार्म - 4 (नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशक स्थान	-	माण्डवला, जिला जालोर (राज.)
2. प्रकाशन अवधि	-	मासिक
3. मुद्रक का नाम	-	डॉ. यू. सी. जैन
(क्या भारत का नागरिक है?)	-	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	-	नहीं
पता	-	जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर
4. प्रकाशक का नाम	-	डॉ. यू. सी. जैन
(क्या भारत का नागरिक है?)	-	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	-	नहीं
पता	-	जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर
5. सम्पादक का नाम	-	डॉ. यू. सी. जैन
(क्या भारत का नागरिक है?)	-	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	-	नहीं
पता	-	जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर
6. उनके नाम व पते जो समाचार पत्रें के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के 1% से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।		श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला, जिला-जालौर (राज.)

मैं डॉ. यू. सी. जैन, जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर (राज.) द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

डॉ. यू. सी. जैन
प्रकाशक के हस्ताक्षर

दिनांक : 05-05-2014

खरतरगच्छ पेढी की मीटींग संपन्न

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी की कार्यकारिणी की बैठक जोधपुर सरदारपुरा दादावाडी में ता. 19 अप्रेल 2014 को पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में अध्यक्ष श्री मोहनचंदजी ढड्ढा की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में महामंत्री पद पर संघवी श्री वंशराजजी भंसाली अहमदाबाद एवं कोषाध्यक्ष पद पर श्री बाबुलालजी लूणिया अहमदाबाद को नियुक्त किया गया। संघवी अशोकजी भंसाली को गुजरात उपाध्यक्ष पद अर्पण किया गया।

बैठक में नाशिक दादावाडी हेतु 5 लाख रूपये का अनुदान स्वीकृत किया गया। मेड़ता सिटी की ऐतिहासिक दादावाडी के जीर्णोद्धार हेतु विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में मेडता सिटी संघ के अध्यक्ष श्री शांतिलालजी सिंघवी आदि प्रतिनिधि उपस्थित थे। वहाँ जिन मंदिर, दादावाडी, हॉल व कमरों के निर्माण का निर्णय लिया गया। इस दादावाडी का निर्माण परम भक्त सेठ श्री फतहचंदजी भडगतिया की ओर से कराया गया था।

बैठक में जीर्णोद्धार कमिटि बनाई गई। संघवी अशोकजी भंसाली-अहमदाबाद को संयोजक बनाया गया। कमेटी में संघवी श्री विजयराजजी डोसी बैंगलोर, उदयराजजी गांधी जोधपुर, दीपचंदजी कोठारी ब्यावर, यशवर्धनजी गोलेच्छा फलोदी, जयकुमारजी बैद रायपुर एवं राकेशजी बोहरा उज्जैन को सम्मिलित किया गया।

जीर्णोद्धार योग्य दादावाडियों का निरीक्षण करके जीर्णोद्धार के संबंध में अपने सुझाव पेढी की कार्यकारिणी में रखने का दायित्व सौंपा गया। साबला दादावाडी के चल रहे जीर्णोद्धार पर विचार विमर्श किया गया।

श्री मोतीलालजी गौतमचंदजी झाबक, रायपुर वाले ट्रस्टी एवं श्री उदयराजजी गांधी-धोरीमन्ना-जोधपुर वाले आजीवन सदस्य बने। पेढी की ओर से उन्हें धन्यवाद अर्पण किया गया।

इंटेल साइंस टैलेंट सर्च के फ्फाइनलिस्ट का बराक ओबामा ने किया स्वागत

सोहम डागा ने किया भारत का नाम रोशन

वाशिंग्टन (अमेरिका) संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा ने पिछले दिनों वाइट हाउस, वाशिंगटन में 2014 इंटेल साइंस टैलेंट सर्च के 40 फाइनलिस्ट विद्यार्थियों से मुलाकात की और उनको प्रोत्साहित किया। ये विद्यार्थी विभिन्न कार्यक्षेत्रों में नवीन व प्रगतिशील रिसर्च प्रोजेक्ट के लिए इस प्रतियोगिता में हिस्सा ले रहे है। यह प्रोजेक्ट कम्प्युटर साइंस, माइक्रा बायोलोजी, पर्यावरणिक, साइंस, इंजिनीयरींग और साइंस, टेक्नोलोजी, इंजिनीयरींग और मैथ्स (गणित) (स्टेम) में से अपने प्रोजेक्ट बनाएंगे। इन 40 विद्यार्थियों में भारतीय मूल के सोहम डागा भी है जो अंतरराष्ट्रीय जैन संस्था वीरायतन के मानद सेक्रेटरी तनसुखराज डागा के पौत्र है। तनसुखराज डागा वीरायतन के साथ कई प्रमुख जैन संस्थाओं के सदस्य है और अपने कार्यों से समाज की सेवा करते रहे है। भारत के इस पुत्र की उपलब्धि पर जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक बधाई और डागा परिवार को शुभकामनाऐं।

जीव राशि क्षमापना कार्यक्रम सम्पन्न

तलोदा में पू. मुनिवर श्री मयंकप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. आदि ठाणा पांच एवं पू. प्रवर्त्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या साध्वी श्री शुभदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा-2 की पावन निश्रा में 1 मई 2014 को श्री गुमानमल जी कोचर की धर्मपत्नी श्रीमती केसर बाई कोचर एवं श्री जसराजजी पारख की धर्मपत्नी श्रीमती बालुबाई पारख के जीव राशि क्षमापना का कार्यक्रम सानंद सम्पन्न हुआ।

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने जीव राशि क्षमापना का उद्देश्य बताते हुए कहा- हर जीव अपने जीवन में सतत पापों का सेवन करता है। उसका यदि कनेक्शन काटा न जाये तो वह भवभ्रमण का विस्तार करता है। जीव राशि क्षमापना का सार्थक अर्थ यह है कि पुरानी कहानी का समापन और नयी जिन्दगी की शुरूआत। चाहे-अनचाहे, जाने-अनजाने जो पाप होते है, जीवों की विराधना होती है, उनका मिच्छामि दुक्कडं देकर शुद्ध, निर्मल और हल्का होना है। अब संसार के कर्त्तव्यों से ऊपर उठकर आत्मार्थ का जीवन जीना है। पूज्य मुनिश्री ने पद्मावती आलोचणा का भावार्थ प्रस्तुत करते हुए हिंसा आदि अठारह पापस्थान को, चौरासी लाख जीव योनियों की विराधना के पापों का त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडं दिलवाया। दोनों परिवारों ने कामली बोहराई तथा यथा शक्ति सातों ही क्षेत्रों में अपनी राशि का सदुपयोग किया। इस अवसर पर अनेक श्रद्धालु बाहर गांव से पधारे थे।

एक नूतन कार्यक्रम अठारह पाप स्थानक आलोचना

तलोदा में पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. के शिष्य पूज्य मुनि मयंकप्रभसागरजी म. मनितप्रभसागरजी म. की आदि साधु-साध्वी मंडल की पावन निश्रा में एक अनूठा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसका नाम था- अठारह पाप स्थानक आलोचना।

श्री नरेशजी कोचर परिवार द्वारा आयोजित जीव राशि समापन के दिन इसका अत्यन्त संवेदनात्मक प्रस्तुतीकरण किया गया।

पू. मुनिवर्य श्री मनितप्रभसागरजी म. द्वारा रचित अठारह पाप स्थानक आलोचना श्लोकों से पूरा वातावरण अध्यात्म से परिपूर्ण हो गया। जनसमूह भाव धारा में बह चला। हर पाप स्थानक की श्लोको के द्वारा आलोचना के उपरान्त अत्यन्त मर्मभेदी विवेचन पू. मुनिश्री मनितप्रभसागरजी द्वारा किया गया। उन्होंने कहा- जीवन में पाप का होना स्वाभाविक है परन्तु उनकी आलोचना, निंदा और गर्हा करना एक महान् खूखी है। हमें तो एक ही काम्य है- वह है जिनशासन! गरीब, लूला, लंगड़ा, अंधा, बहरा, काणा, असहाय, अनाथ, दीन, हीन बनना पसंद है यदि परमात्मा का शासन मिलता है। इन पापों की जो आलोचना करते हैं, त्याग करते है वे वीर महावीर कहलाते है। डेढ़ घण्टे तक चला यह कार्यक्रम पूरे वातावरण में चर्चा का विषय बना रहा है।

जैसलमेर

अहिंसा के अवतार भगवान महावीर स्वामी का 2613वां जन्म कल्याणक महोत्सव जैन ट्रस्ट जैसलमेर व सकल जैन श्री संघ के तत्वावधान में उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर महावीर भवन से गाजे बाजे के साथ शोभायात्रा रवाना हुई जिसमें स्वर्ण जडित रत्न पालकी में भगवान महावीर की मूर्ति विराजमान थी। दोपहर में महावीर षट् कल्याणक पूजा बादामी देवी धर्मपत्नी स्व.मदनलालजी बम्ब परिवार जहाजपुर निवासी द्वारा महावीर भवन में पढाई गई।

जसोल में जीवित महोत्सव की झलकियाँ

हमारे नये संरक्षक

शा. प्रकाशकुमारजी प्रेणितकुमारजी नाहटा, जसोल-दिल्ली

जसोल में जीवित महोत्सव संपन्न

पू. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. एवं पू. बहिन म.डॉ. साध्वी श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में मातुश्री गंगादेवी नाहटा धर्मपत्नी श्री हस्तीमलजी नाहटा का तीन दिवसीय 23.4.2014 से 25.4.2014 तक जीवित महोत्सव का श्री प्रकाशचंदजी प्रेणितकुमारजी नाहटा परिवार द्वारा आयोजन किया गया।

महोत्सव को संबोधित करते हुए बहिन म.श्री विद्युतप्रभा श्री जी म.सा. ने कहा- मातुश्री गंगादेवी ने कठिन परिस्थिति में भी कभी साहस नहीं खोया। उन्होंने अपने परिवार में भी धर्म, विनय एवं प्रेम के संस्कार दिये हैं आज उसी का परिणाम है कि प्रकाशजी का परिवार जसोल में आदर्श परिवार माना जाता है।

साध्वीश्री ने गंगादेवी नाहटा को उनके जीवन में लगे दोषों का मिच्छामिदुक्कडं भी करवाया।

जीवित महोत्सव के उपलक्ष्य में नाहटा परिवार द्वारा अपने नवनिर्मित आवास में उवसग्गहरं महापूजन एवं वास्तुपूजन पढ़ाया गया। वास्तुपूजन पढ़ाने के लिये श्री कुशलवाटिका महिला परिषद् एवं बालिका परिषद् बाड़मेर से पधारे थे। नाहटा परिवार द्वारा सभी का बहुमान किया गया।

कार्यक्रम के अन्तर्गत साध्वीजी भगवंत के साथ परमात्मा के दर्शन का भव्य कार्यक्रम रखा गया। गर्मी होते हुए भी भीड जोरदार थी। बैण्ड की धुन पर नाचते झूमते सकल संघ परमात्मा के दरबार में पहुंचा। रात्रि में चुन्नीलाल राजपुरोहित द्वारा भक्ति संध्या का आयोजन रखा गया था।

नाहटा परिवार द्वारा मातृ-पितृ वंदना का कार्यक्रम सुप्रसिद्ध संगीतकार श्री भावना आचार्य द्वारा रखा गया। इस कार्यक्रम की प्रस्तुति की देखकर एक भी आंख ऐसी न होगी, जो रोयी न हो।

इस अवसर पर श्री प्रकाशचंद जी नाहटा ने गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा- मेरी विनंती स्वीकार कर उन्होंने बहिन म. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. के तय कार्यक्रम को बदलते हुए जसोल भेजकर मुझे अनुग्रहित किया है, मैं उनका अत्यंत आभारी हूँ। इस कार्यक्रम में जसोल संघ सहित बाहर दिल्ली, बैंगलोर, बालोतरा, बाड़मेर आदि अनेक गांवों से लोग पधारे थे। सभी ने कार्यक्रम एवं नाहटा परिवार की उदारता की भूरि-भूरि अनुमोदना की।

परमात्मा महावीर अहिंसा रेली आयोजित

मुम्बई महानगरे चरम तीर्थपती परमात्मा महावीर स्वामीजी के 2613 वें जन्म कल्याणक महोत्सव प्रसंगे श्री मणिधारी युवा परिषद-मुम्बई द्वारा 'अहिंसा रैली' का आयोजन किया गया।

परमात्मा महावीर के उपदेशों को चारों ओर फहराते नारों के नाद के संग-संग चलते छोटे-छोटे पाठशाला के सैकड़ों बच्चों को देखना अद्भुत एवं प्रसंशनीय था।

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ-मुम्बई, श्री मणिधारी युवा परिषद्-मुम्बई एवं श्री खरतरगच्छ महिला परिषद्-मुम्बई द्वारा आयोजित 'अहिंसा रैली' बाजते-गाजते परमात्मा महावीर के जयनाद और नारों के साथ विल्सन स्ट्रीट स्थित शांतिनाथ जिनालय से नानुभाई देसाई रोड़, सी.पी. टेंक, गुलालवाड़ी होते हुए महावीर स्वामी जिनालय-पायधुनी पहुंची। वहां सभी ने सामूहिक प्रार्थना के पश्चात् परमात्मा को जन्मदिवस का लड्डु चढ़ाया व चैत्यवंदन-स्तुति की।

दादा गुरुदेव दर्शन-इकतीसा पाठ व अंत में सभी पधारे महानुभावों को लड्डु की प्रभावना वितरित की गई।

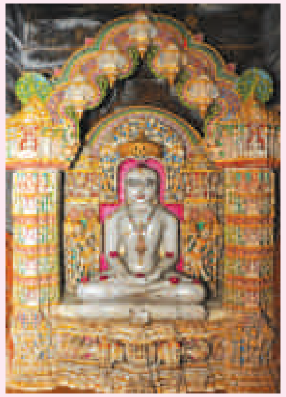

तलोदा में प्रतिष्ठा सम्पन्न

पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा के शिष्य पू. मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म., पू. मनितप्रभसागरजी म., पू. समयप्रभसागरजी म., पू. विरक्तप्रभसागरजी म., पू. श्रेयांसप्रभसागरजी म. की निश्रा में तलोदा नगर में परिकर एवं मंगल मूर्तियों की प्रतिष्ठा 28 अप्रेल 2014 को विजय मुहूर्त्त में सानंद संपन्न हुई।

सबसे पहले अठारह अभिषेक का विधान सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त ऊँ पुण्याहं आदि मंत्रोच्चारणों के साथ परिकर आदि की प्रतिष्ठा की गयी। सकल संघ ने इस कार्य में पूर्ण मनोयोग से प्रभु भक्ति का आनंद उठाया।

पाली में दीक्षा संपन्न

पाली नगर में ऐतिहासिक दीक्षा समारोह ता. 1 मई को अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ संपन्न हुआ। श्री गौतमराजजी डाकलिया के पुत्र, पुत्रवधु, पौत्र व पौत्री ने दीक्षा ग्रहण कर एक अभिनव इतिहास की रचना की।

पूज्य मुनिराज श्री जयानंदजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनिराज श्री कुशलमुनिजी म. नंदीषेणमुनिजी म. की पावन निश्रा में यह समारोह हुआ।

ता. 29 अप्रेल को श्री जगदीशचंदजी भंसाली परिवार की ओर से भव्यातिभव्य वरघोडा निकाला गया एवं स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। ता. 30 अप्रेल को वर्षीदान का वरघोडा निकला। ता. 1 को 15 हजार लोगों की विशाल उपस्थिति में दीक्षा महाविधान संपन्न हुआ। श्री मनोजकुमारजी का नाम विरागमुनि, कुमार भव्य का नाम भव्य मुनि, सौ. मोनिका देवी का नाम विरतियशाश्रीजी एवं कुमारी खुश्बू का नाम विनम्रयशाश्रीजी रखा गया।

पू. साध्वी गुरूवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित
श्री मुनिसुव्रतस्वामी मंदिर दादावाडी तीर्थ से सुशोभित
श्री जिनकुशल हेम विहारधाम
जोधपुर-जालोर मुख्य मार्ग पर, जोधपुर से 90 कि.मी., जालोर से 50 कि.मी.।
आवास भोजन की सुन्दर व्यवस्था। दर्शन, पूजा हेतु अवश्य पधारें।
निवेदक- शा. केवलचन्दजी छोगालालजी संकलेचा परिवार
संपर्क- 099784 02271, 099505 22754

साधु साध्वी समाचार

प0 पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म.सा. छत्तीसगढ में बिराज रहे हैं। वहाँ से पूज्यश्री नवसारी की ओर विहार करेंगे।

पूज्य मुनि श्री पीयूषसागरजी म.सा. छत्तीसगढ की प्रतिष्ठाओं की संपन्नता के पश्चात् ऋजुबालिका की ओर विहार कर रहे हैं। जहाँ उनकी निश्रा में ता. 25 जून को प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा. बाडमेर में नवपद ओली की आराधना संपन्न करवाकर सिणधरी होते हुए जहाज मंदिर पधारे। वहाँ से विहार कर फालना पधारे। जहाँ उनकी पावन निश्रा में ता. 2 मई 2014 को आराधना भवन का उद्घाटन संपन्न हुआ। वहाँ से पूज्यश्री डुठारिया पधार गये हैं।

पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा. ठाणा 5 विहार कर बडौदा पधारे। वहाँ से विहार कर राजपीपला होते हुए सेलंबा, खापर, अक्कलकुआ, वाण्याविहिर होते हुए तलोदा पधारे हैं। वहाँ मूलनायक परमात्मा के परिकर की प्रतिष्ठा संपन्न करवाकर शहादा पधार गये हैं। वहाँ उनकी पावन निश्रा में त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन होने जा रहा है। वहाँ से विहार कर मन्दाना पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में ता. 14 मई 2014 को वासुपूज्य मंदिर की प्रतिष्ठा संपन्न होगी। वहाँ से वे धूलिया, पूना होते हुए इचलकरंजी की ओर विहार करेंगे।

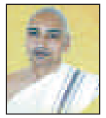

पूज्य मुनि श्री महेन्द्रसागरजी म. आदि ठाणा 10 एवं पूजनीया साध्वी श्री हेमप्रज्ञाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा 9 विहार करते हुए झारखण्ड के चतरा जिले में भोंदल गांव में नवनिर्मित भद्दिलपुर तीर्थ पधारे हैं। जहाँ उनकी पावन निश्रा में 12 मई 2014 को अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न होगी। उसके बाद ऋजुबालिका की ओर विहार करेंगे।

पूज्य मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म.सा. मननप्रभसागरजी म. ने जोधपुर से नाकोडाजी की ओर विहार किया है। वहाँ से जहाज मंदिर, जीरावला आदि तीर्थों की यात्रा करते हुए पालीताना पधारेंगे।

पूजनीया प्रवर्तिनी श्री कीर्तिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 इन्दौर से विहार कर 30 अप्रेल को नाशिक पधारे हैं। वे लगभग महिने भर स्वाध्याय आदि के लिये मानस मंदिर में रूकेंगे। बाद में चातुर्मास हेतु मुंबई पायधुनी की ओर विहार करेंगे।

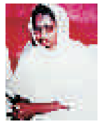

पूजनीया साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. ऋजुबालिका तीर्थ में बिराज रहे हैं। जहाँ उनकी प्रेरणा से तीर्थ का जीर्णोद्धार तीव्र गति से चल रहा है। इस तीर्थ की प्रतिष्ठा ता. 25 जून को संपन्न होगी।

पूजनीया साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में ता. 18 अप्रेल को शाजापुर दादावाडी की प्रतिष्ठा अत्यन्त आनंद के साथ संपन्न हुई। वे वहाँ से मालपुरा होते हुए जयपुर की ओर विहार कर रहे हैं।

पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. सुलक्षणाश्रीजी म.सा. लखनऊ से विहार कर कानपुर पधारे, जहाँ उनकी पावन निश्रा में 23 अप्रेल को दादावाडी की ध्वजा विशाल समारोह के साथ चढाई गई। वहाँ से वे विहार करते हुए अक्षय तृतीया को कम्पिल तीर्थ पधारें एवं आगरा, शौरीपूर होते हुए हस्तिनापुर पधरेंगे।

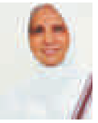

पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. सा. चेन्नई के उपनगरों में विहार कर रहे हैं। अक्षय तृतीया के बाद लगभग 5 मई के आसपास बैंगलोर की ओर विहार करेंगे।

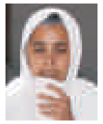

पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म.सा. , पूजनीया साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. सा., पूजनीया साध्वी श्री जिनज्योतिश्रीजी म. सा. नाशिक बिराज रहे हैं। वे नाशिक के उपनगरों में विहार कर रहे हैं। उनकी प्रेरणा से निर्मित विशाल कच्छप आकार में श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर एवं दादावाडी का निर्माण हो रहा है। जिसकी प्रतिष्ठा 18 जून 2014 को संपन्न होगी।

पूजनीया साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा बल्लारी से 30 अप्रेल को विहार कर हॉस्पेट पधारे हैं। लगभग 10 दिनों की स्थिरता के पश्चात् कोप्पल पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में जिन मंदिर की वर्षगांठ महोत्सव का भव्य आयोजन होगा।

पूजनीया साध्वी श्री हर्षपूर्णाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 हुबली बिराज रहे हैं।

पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. सा., पू. साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म.ठाणा 3 ता. 3 मई को नाकोडाजी से विहार करेंगे। वे ता. 20 मई तक अहमदाबाद पधारेंगे।

पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म.सा. आगोलाई प्रतिष्ठा की पूर्णता के पश्चात् विहार कर थोभ, पचपदरा, बालोतरा होते हुए जसोल पधारे। वहाँ जीवित महोत्सव की संपन्नता के पश्चात् ता. 26 अप्रेल को अम्बे वेली पधारे। जहाँ परमात्मा वासुपूज्य प्रभु की चल प्रतिष्ठा की गई। वहाँ से विहार कर नाकोडाजी पधारे, जहाँ श्री रतनलालजी व्यापारीलालजी बोहरा हाला वालों की ओर से आयोजित यात्रा संघ पहुँचा। संघ की ओर से पूजनीया गुरुवर्याश्री का अभिनंदन किया गया। गुरुवर्याश्री का मार्मिक प्रवचन हुआ। ता. 27 अप्रेल को विहार कर करमावास, मजल, जेतपुर होते हुए ता. 2 मई 2014 को डुठारिया नगर में पूज्य गुरुदेव के साथ मंगल प्रवेश हुआ। प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् ता. 11 मई को अहमदाबाद की ओर विहार होगा।

पूजनीया साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 वैशाख शुक्ल पूर्णिमा तक कुलपाकजी पहुँचेंगे। वे चेन्नई की ओर विहार कर रहे हैं।

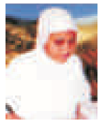

पूजनीया साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 अक्षय तृतीया को अहमदाबाद पधारे हैं। कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् बाडमेर की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री जयरत्नाश्रीजी म. नूतनप्रियाश्रीजी म. ठाणा 3 ने ता. 4 मई को हुबली में प्रवेश किया है। चार पांच दिनों की स्थिरता के पश्चात् बैंगलोर की ओर विहार करेंगे।

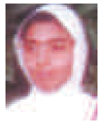

पूजनीया साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 पालीताना श्री जिन हरि विहार में बिराज रहे हैं। पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. एवं पूजनीया साध्वी श्री प्रियदक्षांजनाश्रीजी म. के दूसरे वर्षीतप का पारणा अत्यन्त आनंद के साथ संपन्न हुआ।

संरक्षक सूचि

जहाज मंदिर 'मासिक' के माननीय संरक्षक

- श्री गोविन्दचन्दजी,राजेशजी,राकेशजी मेहता, जोधपुर–मुम्बई
- डॉ.यू.सी.जैन,अजयजी,संजयजी ललितजी जैन,पार्थ जैन,उदयपुर
- श्री माणकचंदजी,गौतमचंदजी चौपड़ा,ब्यावर
- श्री संजयकुमारजी,कनिष्ठकुमारजी बरडिया,ब्यावर
- श्री ओमप्रकाशजी जैन(ओमजी दवाईवाला),ब्यावर
- श्री उगमराजजी,सुरेशकुमारजी मेहता,ब्यावर
- सेठ श्री शंभुमलजी बलवन्तजी,यशवंतजी रांका,ब्यावर
- श्री मदनलालजी,दीपचंदजी कोठारी,ब्यावर
- श्री फतेहलालजी,सुल्तानजी,लक्ष्मणजी,आजादजी,संजयजी सिंघवी,उदयपुर
- श्री मोहनसिंहजी पुत्र राजीव पौत्र चिराग दलाल,सुराणा, उदयपुर
- श्री सुधीरजी चावत,उदयपुर
- श्री किस्तुरचन्दजी,छगनलालजी चौपड़ा,रतलाम
- श्री किरणमलजी सावनसुखा,उदयपुर
- श्रीमती शान्ति मेहता ध.प.श्री विजयसिंहजी मेहता, उदयपुर
- श्री कुरीचन्दजी,चन्दनमलजी मालसिया,ऋषभदेव
- श्री दौलतसिंहजी,प्रतापसिंहजी गाँधी,उदयपुर
- श्री विमलचंदजी सौ.मेमबाईसा सुराणा,जयपुर
- श्री किशनचन्दजी बोहरा,सौ.सुधादेवी,जयपुर
- श्री कनकजी श्रीमाल,जयपुर
- श्री भँवरलालजी,ललितकुमारजी संखलेचा,पादरू–चैन्नई
- श्री शंकरलालजी बाफना,उदयपुर
- श्रीमती शांतादेवी जुहारमलजी गेलड़ा,उदयपुर
- श्री वंसराजजी,मिश्रीमलजी पालरेचा,भरतवाला,मोकलसर
- श्री मीठालालजी,अमीचंदजी पालरेचा,भारतवाला,मोकलसर
- श्री मुन्नीलालजी डागा,जयपुर
- श्री सम्पतराजजी गादिया,बंगलौर
- श्री आसुलालजी,मांगीलालजी,बाबूलालजी डोशी,चौहटन, (बाड़मेर)
- श्री रिखबचंदजी,प्रकाशचन्दजी सेठिया,चौहटन(बाड़मेर)
- श्री शीतलदासजी,विरेन्द्रकुमारजी राक्यान,नई दिल्ली
- श्री ज्ञानचन्दजी,महेन्द्रकुमारजी मेघा,नई दिल्ली
- श्री नगराजजी,पवनराजजी,अशोककुमारजी मेहता,उदयपुर
- घोड़ा श्री सुमेरमलजी,मोतीलालजी,बाबूलालजी श्रीश्रीमाल,केशवणा
- श्री पवित्रकुमारजी,सुनीलजी,गुनीतजी बाफना, कोटा–नई दिल्ली
- श्री अरुणकुमारजी,हर्षाजी हर्षावत,नई दिल्ली
- श्री राजकुमारजी,ओमप्रकाशजी,रमेशकुमारजी चौरड़िया, नई दिल्ली
- श्री मोतीचन्दजी,श्रीमती आभादेवी पालावत,नई दिल्ली
- श्री विरेन्द्रजी,राजेन्द्रजी अभिषेकजी,आदित्यजी,पीयूषजी मेहता,दिल्ली
- श्री आर.मफतलाल,सौभागबेन चन्दन,चैन्नई
- श्री चिन्तामणदासजी,तगामलजी बोथरा,बाड़मेर
- मूथा शा.नेनमलजी,पन्नालालजी सोनवाड़िया,मांडवला
- श्रीमती शांताबेन,हरकचन्दजी बोथरा,सांचोर
- श्री भंवरलालजी,बाबूलालजी पारख,जीवाणा
- श्री मूलचंदजी बख्तावरमलजी बाफना,हीराणी,पादरू
- श्रीमती प्रेमलताजी,श्री चन्द्रराजजी सिंघवी,जोधपुर
- श्री रिखबचंदजी,राहुलकुमारजी मेघा,नई दिल्ली
- श्री अनूपचन्दजी,अनिल,अशोक,अजय कोठारी,रायपुर
- श्री अशोककुमारजी,श्रीमती चंदादेवी जैन,नई दिल्ली
- श्रीमती नीलमजी सिंघवी,नई दिल्ली
- श्री शीतलदासजी,जितेन्द्रकुमारजी राक्यान,नई दिल्ली
- श्रीमती विजयादेवी,धीरजबहादुरसिंहजी दुग्गड़,नई दिल्ली
- श्री बाबूलालजी,हरखचन्दजी छाजेड़(सी.टी.सी.),चेन्नई
- श्री सुरेन्द्रमलजी,गजेन्द्रजी,धर्मेन्द्रजी पटवा,जालौर
- श्री पारसमलजी,भानमलजी छाजेड़,मांडवला–मुम्बई
- संघवी कानमलजी,बाबूलालजी,नेमीचंदजी,अशोकजी गोलेछा,जीवाणा–चेन्नई
- स्व.हस्तीमलजी छोगाजी,हिरोणी रेवतडा–चेन्नई
- श्रीमती जतनबाई धर्मपत्नी स्व. मेहताबचंद जी गोलेछा, जयपुर
- श्रीमती सरोज,फतेहसिंहजी,सिद्धार्थजी बरड़िया,जयपुर
- श्री पुखराजजी,हस्तीमलजी पालरेचा,बैंगलोर
- श्री कुशलचंदजी, पारसकुमारजी, सतीशकुमारजी मेड़तवाल, ब्यावर
- श्री दिलीपजी छाजेड़,खाचरोद,उज्जैन
- श्री पारसमलजी,चंपालालजी छाजेड़,सिवाना–हैदराबाद
- श्री नेमीचन्दजी श्यामसुन्दरजी,बेदमुथा,रायपुर
- श्री जुगराजजी, रमेशजी, उत्तमजी, महेन्द्रजी छाजेड़ सिवाना–मदुराई
- श्रीमती इन्द्रा महेशजी जैन(नाहटा) नई दिल्ली
- श्री बी.एम.जैन लक्ष्मीनगर,दिल्ली
- श्री नेवलचन्दजी मोहनलालजी जैन,गाजियाबाद
- श्री घनश्यामदासजी, नवीनजी, सुशीलजी, सुनीलजी जैन, नई दिल्ली
- श्री शांतिलालजी जैन दफ्तरी, नई दिल्ली
- श्री शांतिप्रकाशजी, अशोक कुमार, प्रवीण सिंधड़, अनूप शहर, नई दिल्ली
- श्रीमती भारतीबेन, शांतिलालजी चौधरी, नई दिल्ली
- श्री सुमेरमलजी, मिश्रीमलजी बाफना, मोकलसर–दिल्ली
- श्री भीकमचन्दजी, बाबूलालजी, तोगमलजी गोलेछा, पादरू–हैदराबाद
- श्री रूपचन्दजी, नरेन्द्र, देवेन्द्र, नमनजी भंसाली, हालावाले–जयपुर
- श्री खीमचन्दजी, अशोक कुमारजी, कंकू, चौपड़ा, जीवाणा–बैंगलोर
- श्री प्रकाशकुमार, अंकित कुमारजी जीरावला, सूरत
- शा. जेठमलजी, आसकरणजी गुलेच्छा, फलोदी–चैन्नई
- श्री द्वारकादासजी, पीयुषजी, अनिलजी, भरतजी, महावीरजी डोशी, चौहटन
- श्रीमती पुष्पाजी ए., केतनजी, चेतनजी जैन पाली–मुम्बई
- मै. राखी वाला, चैन्नई
- श्री दुलीचन्दजी, धर्मेश कुमारजी टॉक, जयपुर
- श्री महरचन्दजी मनोज कुमारजी, धांधिया, जयपुर
- श्री मनमोहनजी अनुपजी बोहरा, जयपुर
- श्री जितेन्द्रजी, नवीन, अजय, नितीन मेहमवाल, (श्रीमाल), जयपुर
- श्री राजेन्द्र कुमारजी, संजयजी, संदीपजी छाजेड़, जयपुर
- श्री इन्द्रचन्दजी, विमलचन्दजी, पदमचन्दजी, ज्ञानचन्दजी भण्डारी, जयपुर
- श्री विमलचन्दजी, महावीर चन्दजी पंसारी, जयपुर
- श्री पारसमलजी, पंकज कुमारजी गोलेछा, जयपुर
- श्री शांतिचन्दजी, विमलचन्दजी, पदमचन्दजी, पुंगलिया, जयपुर
- श्री हुकमीचन्दजी, विजेन्द्रजी, पूर्णेन्द्रजी, कांकरिया, जयपुर
- श्री ताराचन्दजी, विजयजी, अशोकजी, राजेन्द्रजी, संचेती, जयपुर
- श्री भीमसिंहजी, तेजसिंहजी खजांची, जयपुर
- श्री सौभागमलजी, ऋषभ कुमारजी चौधरी, जयपुर
- श्री संतोषचन्दजी, विजयजी, अजयजी, झाड़चूर, जयपुर
- श्री हरकचन्दजी, सेवन्तीजी, जितेन्द्रजी, विनोदजी, राजेशजी शाह, सांचोर
- श्री चन्द्रसिंहजी, विपुल कुमारजी, सुराणा–दिल्ली
- श्री मदनलालजी, रायचन्दजी, शंखलेशा, रामा–कल्याण
- श्री टीकमचन्दजी, हीराचन्दजी छाजेड़, उज्जैन
- श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्रजी, ज्ञानचन्दजी गोलेछा, जयपुर
- श्री लक्ष्मीचन्द हलवाई पुत्र श्री जेठमलजी अग्रवाल, जोधपुर
- श्री मीठालालजी, मनोज कुमार, गुणेशमलजी भंसाली, उम्मेदाबाद–बैंगलोर
- श्री उमेश कुमारजी, मुकेश कुमारजी तातेड़, रायपुर
- श्री बाबूलालजी शर्मा (राकांवत डेकोरेटर्स), तखतगढ़, पाली
- श्री रतनचन्दजी, सौ. निर्मला देवी बच्छावत, फलोदी
- श्री उमरावचन्दजी, प्रसन्नचन्दजी, किशनचन्दजी, डागा, जयपुर
- श्री बाबूलालजी, रमेश, अशोक लूंकड़, मोकलसर–इचलकरंजी
- श्री कानसिंहजी, मधुसूदन, सुदर्शन, संजय चौधरी कोठियां, भीलवाड़ा
- श्री नथमलजी, भंवरलालजी, सौ. किरणदेवी पारख, लोहावट
- श्री रतनलालजी, विनोद कुमार, गौतम कुमार बोहरा, हाला वाले, बाड़मेर
- श्री मनोहरमलजी, दलपत कुमार, महेश, हरीश, नाहटा, हाला वाले, फालना
- श्री खूबचन्दजी, चन्दनमलजी, बोहरा, हाला वाले फालना
- श्री आनन्द कुमारजी, कांतिलाल, प्रकाशचन्दजी चौपड़ा, हाला वाले बैंगलोर
- श्री रतनलालजी, अतुल, अमित, श्री श्रीमाल, हाला वाले जयपुर
- श्री जीवनसिंहजी, दीपक कुमार, राजेश कुमारजी लोढ़ा, गुरलां –भीलवाड़ा
- श्री प्रेमसिंहजी, राजेन्द्र कुमार, नरेन्द्र कुमारजी बोहरा, गुरलां–भीलवाड़ा
- श्री भॅवरलालजी, बलवन्तसिंहजी मेहता, गुरलां–भीलवाड़ा
- श्री लक्ष्मीचन्दजी केसरीमलजी चण्डालिया कोटा
- श्री इन्द्रचन्दजी गौतमचन्दजी चौपड़ा, बिलाड़ा–हैदराबाद
- श्री बलवन्तसिंहजी, करणसिंह, सुरेन्द्र सिंह पारख, उदयपुर
- श्री पूनमचन्दजी, नैनमलजी मरड़िया, डंडाली–अहमदाबाद
- श्री माणकमलजी,मांगीलाल, नरेशकुमारजी धारीवाल, चौहटन – अहमदाबाद
- श्री महताबचन्दजी, विशालकुमारजी बांठियां, जयपुर–मुंबई
- श्री आसूलालजी, ओमप्रकाशजी, संकलेचा, बाड़मेर
- श्री मोतीचन्दजी, फोजमलजी झाबक, बड़ौदा
- श्री चम्पालालजी झाबक परिवार, बड़ौदा

✙ सौ. रूपाबाई गुलाबचन्दजी चौरड़िया, खापर
✙ श्री लालचन्दजी, कानमलजी, गुलेच्छा, अक्कलकुआ
✙ श्री लूणकरणजी, घीसुलालजी, सौ. चन्द्रादेवी सेठिया, तलोदा
✙ मुथा चन्दनमलजी, महेन्द्र कुमारजी तातेड़, पादरू, नंदुरबार
✙ श्री ज्ञानचन्दजी, रामलालजी लूणिया–अजमेर
✙ श्री अभयकुमारजी, अशोक कुमार, अनूप कुमार पारख–जयपुर
✙ शा. भंवरलालजी,कमलचन्द,रिषभ,गुलेच्छा, मुम्बई
✙ श्री त्रिलोकचन्दजी, प्रेमचन्दजी, सिंघी, जयपुर
✙ श्री पारसमलजी वी. जैन, सांचोर–बडोदरा
✙ श्री प्रेमचन्दजी संतोकचन्दजी गुलेच्छा, खापर
✙ श्री रामरतनजी नरायणदासजी छाजेड़, केशवणा–डोम्बीवल्ली
✙ श्री मोतीलालजी ओसवाल, पादरू–मुम्बई
✙ श्री अतुलजी हनवंतचन्दजी भंसाली, जोधपुर–मुम्बई
✙ श्री महेन्द्रकुमारजी, शेषमलजी, दयालपुरा वाले, मुम्बई
✙ श्री पारसमलजी, मांगीलालजी लूणावत, खेतिया
✙ संघवी श्री पूनमचंदजी पुखराजजी छाजेड़, पादरू–मुम्बई–चैन्नई
✙ श्री लाधमलजी मावाजी मरड़िया, चितलवाना
✙ श्री मिश्रीमलजी चन्दाजी मरड़िया, सांचोर
✙ श्री कन्हैयालालजी, भगवानदासजी डोसी–मुम्बई
✙ श्री रिखबचन्दजी जैन – मुम्बई
✙ श्री भंवरलालजी, हस्तीमलजी कोचर–अक्कलकुंआ
✙ श्री रमेशचन्दजी, सुशीलकुमारजी बच्छावत, फलोदी (राज.)
✙ श्री प्रमोदकुमारजी, बंशीलालजी भंसाली, खेतिया (म.प्र.)
✙ श्री कानूगो प्रकाशमलजी छगनलालजी बोथरा, सांचोर
✙ श्री बाबूलालजी मालू–सूरत
✙ श्री प्रेमचंदजी गेमरमलजी छाजेड़–बाड़मेर–सूरत
✙ श्री चतुर्भुजजी विजयराजजी श्रीश्रीमाल – फालना–मुंबई
✙ श्री भवँरलालजी विरदीचन्दजी छाजेड़ – हरसाणी –मुंबई
✙ श्री भंवरलालजी, नेमीचन्दजी, संघवी कटारिया, पादरू
✙ श्री जगदीश चन्द, नितेश कुमार एण्ड कम्पनी, इचलकरंजी
✙ श्री देवीचंदजी छोगालालजी वडेरा, बाड़मेर–इचलकरंजी
✙ श्री बाबूलालजी ओमप्रकाशजी पारसमलजी छाजेड़, बाड़मेर–इचलकरंजी
✙ श्री संपतराजजी लूणकरणजी संखलेचा, बाड़मेर–इचलकरंजी
✙ श्री मांगीलालजी खीमराजजी छाजेड़, रामसर–इचलकरंजी
✙ श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़, हरसाणी वाले इचलकरंजी
✙ श्री ओमप्रकाशजी मुलतानमलजी वैद मुथा कवास वाले, इचलकरंजी
✙ श्री छगनलालजी देवीचंदजी मेहता, बाड़मेर–इचलकरंजी
✙ श्री अशोककुमारजी सुरतानमलजी बोहरा, भिंयाड़–इचलकरंजी
✙ श्री मिश्रीमलजी विजयकुमार रणजीत ललवानी, सिवाना–इचलकरंजी
✙ श्री शिवकुमार रिखबचंदजी ललवानी, सिवाना–इचलकरंजी
✙ स्व. रूपसिंहजी मदनसिंह रतनसिंह राजपुरोहित–इचलकरंजी
✙ श्री फरसराजजी रिखबदासजी सिंघवी, बाड़मेर–इचलकरंजी
✙ श्री किशनलालजी, हसमुख कुमार, मिलापजी, भंसाली, खेतिया
✙ श्रीमती मानकुँवरबाई गेनमलजी भंसाली, खेतिया–नासिक
✙ शा. भीकचंदजी धनराजजी देसाई, सिणधरी–मल्हार पेठ
✙ श्री वरदीचंदजी पंकजकुमारजी, महावीरकुमारजी बाफना, बैंगलोर
✙ स्व. दाड़मी देवी, श्री पुखराजजी बोथरा, सांचोर
✙ श्री घनश्यामदास, दीपककुमारजी पारख, हालावाले जयपुर
✙ श्री हीराचंदजी मांगीलालजी बागरेचा, सिवाना–इचलकरंजी
✙ संघवी श्री हंसराजजी,रमेशजी सुरेशजी पुत्र श्री मोहनलालजी मूथा,मांडवला
✙ शा. घेवरचंदजी शंकरलालजी साकरिया, सांडेराव–बैंगलोर
✙ श्री पुखराजजी तेजराजजी गुलेच्छा, मोकलसर–बैंगलोर
✙ श्री राजेन्द्रकुमारजी तिलोककुमारजी बोथरा, बैंगलोर
✙ श्री छगनलालजी शांतिलालजी लूणावत, शांतिनगर, बैंगलोर
✙ मिस्त्री मोहनलाल आर.लोहार, पो.चांदराई वाया गुडाबालोतान जि.जालोर
✙ शा. सज्जनराजजी रतनचंदजी मुथा, बैंगलोर
✙ श्री तेजराजजी मनोजकुमारजी आनन्दकुमारजी मालाणी,मोकलसर–बैंगलोर
✙ शा. मूलचन्दजी किरण अरूण विक्रम पुत्र पौत्र मिश्रीमलजी भंसाली, सिवाना–बैंगलोर
✙ श्री कन्हैयालालजी सुभाषचंदजी नरेशचंदजी रांका, चैन्नई
✙ श्री अरूण कुमारजी, बापूलालजी डोसी, इन्दौर
✙ श्री राजेन्द्र कुमार, राणुलालजी डागा, अक्कलकुआ
✙ शा. मोतीलाल एण्ड सन्स, इंचलकरंजी
✙ श्री प्रवीण कुमार पृथ्वीराजजी ललवानी, इंचलकरंजी
✙ श्री भंवरलालजी देवाजी पालगोता चौहान,बैंगलोर
✙ श्री पारसमलजी देवाजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
✙ श्री जुगराजजी घेवरचंदजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
✙ श्री कन्हैयालालजी ओटमलजी छगनलालजी सुजली रांका, बैंगलोर
✙ श्री गेनमलजी हरकचंदजी लूणिया, बैंगलोर
✙ श्री मोटमलजी कानमलजी सदानी, बैंगलोर
✙ संघवी शा. समरथमलजी सोनाजी रांका, उम्मेदाबाद–चेन्नई
✙ श्री सुगनचंदजी राजेशकुमारजी बरडिया, चेन्नई
✙ श्री मूलचंदजी मिश्रीमलजी बुर्ड, सांचोर–मुम्बई
✙ श्री पदमकुमारजी प्रवीणकुमारजी टांटिया, जोधपुर–चेन्नई
✙ शा. गिरधारीलालजी बादरमलजी संखलेचा, पादरू–चेन्नई
✙ श्रीमती कमला देवी प्रकाशचंदजी लोढ़ा, चैन्नई
✙ श्री पदमचंदजी दिनेशकुमार जी कोठारी, चैन्नई
✙ मै. एम. के कोठारी एण्ड कम्पनी, चैन्नई
✙ श्री वीरेन्द्र मलजी आशीषकुमार मेहता वडपलनी–चैन्नई
✙ श्री एस. मोहनचंदजी ढ़ड्ढा, चैन्नई
✙ श्रीमती कमला देवी मूलचंदजी गोलेच्छा, फलोदी–चैन्नई
✙ श्री माणकचंदजी धर्मचंदजी गोलेच्छा, फलोदी–चैन्नई
✙ शा. लालचन्दजी कान्तीलालजी छाजेड़, गढ़ सिवाना–चैन्नई
✙ श्री रूपचन्द, जवेरीलालजी गोलेछा, ढालूवाले, पादरू
✙ श्री जुगराजजी (सी.ए.) कैलाशजी दिनेशजी चौधरी, जालोर–भायंदर (मुं)
✙ श्री पुखराजजी आसुलालजी बोहरा, बाड़मेर–इंचलकरंजी
✙ श्री पुखराजजी सरेमलजी ललवानी, सिवाना–इंचलकरंजी
✙ श्री सुरेशकुमार हिन्दूमलजी लूणिया, चैन्नई
✙ श्री हीराचंदजी बबलसा गुलेच्छा – टिंडीवनम–चैन्नई
✙ श्री भीखचंदजी सुमेरमलजी ललवानी, सिवाना–इचलकरंजी
✙ शा. डूंगरचंदजी यशकुमारजी ललवानी, सिवाना–चैन्नई
✙ श्री बाबूलालजी कन्हैयालालजी भूरचंदजी मालू, हरसाणी–इचलकरंजी
✙ श्री मुन्नीलालजी, जयरूपजी नागोत्रा सोलंकी, बालवाड़ा
✙ श्री प्रकाशचंदजी चौपड़ा – हैदराबाद
✙ श्री रिषभलाल मांगीलालजी छाजेड़ – इंचलकरंजी
✙ श्री जगदीशचन्द, देवीचन्दजी, भंसाली, बाड़मेर–पाली
✙ श्री शंकरलाल केशरीमलजी धारीवाल, बाड़मेर
✙ शा. मोहनलालजी किरण दिनेश प्रवीण पुत्र पौत्र शा. बस्तीमलजी, मांडवला
✙ श्री बाबूलाल भगवानदास बोथरा, बाड़मेर
✙ श्री जसराज आनन्दकुमार चौपड़ा, जयपुर
✙ श्रीमती जतनदेवी सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट, हावड़ा
✙ स्व. श्री उत्तमराज पारसकंवर सिंघवी, विजयनगर
✙ स्व. श्री भीमराजजी बादरमलजी छाजेड़ परिवार, सिवाना–पूना
✙ श्री मोहनलालजी हरखचंदजी गुलेच्छा, विजयवाड़ा
✙ श्री रतनचंदजी उत्तमचंदजी चौपड़ा, हैदराबाद
✙ श्री दिलिपकुमारजी जांवतराजजी श्रीश्रीमाल, सांचौर–मुंबई
✙ श्री माणकचंदजी छाजेड़, सिवाना–हैदराबाद
✙ श्री पन्नालालजी, महेन्द्रसिंहजी, गौतमकुमारजी नाहटा, कोलकात्ता–दिल्ली
✙ श्री पी. एच. साह, बैंगलोर
✙ श्री बाबुलालजी सुमेरमलजी, मुंबई
✙ शा. हरकचन्दजी समरथमलजी, चैन्नई
✙ श्रीमती सुआदेवी उदयचंदजी नाथाजी, जीवाणा–मुंबई
✙ श्रीमती मायादेवी की स्मृति में पुत्र विनोद शर्मा पुत्र श्री घनश्याम प्रसाद शर्मा, सोमपुरा, आगरा
✙ श्री जितेन्द्र केशरीमलजी सिंघवी, मुंबई
✙ श्री रमेश सागरमलजी सियाल, मुंबई
✙ श्री सुमेरमलजी पुखराजजी बोथरा, सांचौर–हैदराबाद
✙ श्री गौतम डी. भंसाली, मुंबई
✙ शा. सागरमलजी फूलचंदजी सियाल, मुंबई
✙ श्रीमती शांतिदेवी जुगराजजी पंचाणमलजी मरडिया, चितलवाना (कारोला) – मुंबई
✙ शा. जावंतराजजी भीमराजजी मोहनलालजी गांधी, चितलवाना
✙ शा. प्रकाशचंदजी विजयचंदजी लोढ़ा, जयपुर
✙ श्री विनोदकुमारजी पारख, बैंगलोर
✙ श्री जगदीशकुमार खेताजी सुथार, कोलीवाड़ा
✙ श्री नेमीचंदजी राजेशकुमारजी कटारिया, चैन्नई
✙ शिल्पी श्रवणकुमार सुरताजी प्रजापति, गोदावरी मार्बल, पिण्डवाड़ा
✙ श्री मोहनलालजी केवलचंदजी छाजेड़, मुंबई

– श्री गेंदमल, पुखराजजी चौपड़ा, उज्जैन
– श्री रतनचन्द, जयकुमार, जिनेन्द्रकुमारजी चौपड़ा, उज्जैन
– श्री कन्हैयालालजी, मुकेश कुमारजी, सोमपुरा, लुणावा (पाली)
– श्री धावलचन्दजी, छगनलालजी बोथरा, सांचोर
– श्री पारसमलजी, हजारीमलजी, बोहरा, सांचोर
– श्री चुन्नीलालजी, मफतलालजी मरड़िया, सांचोर–सूरत
– श्री जसराज, राणुलालजी कोचर, अक्कलकुआ
– श्री मेघराजजी, तेजमलजी ललवानी, अक्कलकुआ
– श्री गौतमचन्दजी राजमलजी डूंगरवाल, देवड़ा–सूरत
– श्री मांगीलालजी आसुलालजी मालू, बाड़मेर–सूरत
– श्री पुण्यपालजी अनिलजी सुनीलजी, सुराणा–इन्दौर
– शा. पीरचंद बाबुलाल एण्ड कं., बाड़मेर–इचलकरंजी
– मेहता पुखराजजी सुमेरमलजी, पादरू–सेलम
– शा. जुगराजजी मिश्रीमलजी तलावट, उम्मेदाबाद–सेलम
– श्रीमती मथरीदेवी शांतिलालजी वाघेला, मुंबई

वर्षीतप पारणा सम्पन्न

तलोदा नगर में पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पू. मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. आदि ठाणा-5 की पावन निश्रा एवं साध्वी श्री शुभदर्शनाश्रीजी म. के सानिध्य में श्री गुमानमलजी केसरबाई की पुत्रवधु सौ. रश्मिदेवी नरेशजी कोचर के वर्षीतप का पारणा अत्यन्त उल्लास से सम्पन्न हुआ। 2 मई 2014 को उनकी शोभायात्रा का आयोजन सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त तपस्वी का बहुमान किया गया।

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने तप की महिमा का वर्णन करते हुए कहा- तप की साधना कोई सरल नहीं है। एक एकासन तप करते है तब भी भूख लग जाती है तब 400 दिनों तक एकान्तर उपवास (वर्षीतप) की आराधना कितनी कठिन है। तप से भव-भव के संचित पाप-ताप-संताप समाप्त हो जाते है। आदिनाथ प्रभु ने यह तप किया नहीं, अपितु हो गया। पूर्व भव के अन्तराय कर्मोदय से उन्हें 400 दिनों तक आहार प्राप्त नहीं हुआ। पूज्य मुनिश्री ने परिवारजनों को प्रत्याख्यान दिये। परिवार जनों ने गुरुजनों को कामली अर्पण की। इस अवसर अंकिता पारख ने एक सुन्दर नाटिका प्रस्तुत की। कोचर परिवार की ओर से स्वामीवात्सल्य का आयोजन हुआ। सकल जैन संघ गाजते-बाजते नरेशजी कोचर के गृहांगन में पहुंचा और तपस्वीजी का पारणा सम्पन्न हुआ। नरेशजी और रश्मिजी कोचर ने अपने माताजी केसरदेवी के चरणों का दूध से प्रक्षालन करके आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर नागपुर, हिंगनघाट, इन्दौद, अहमदाबाद, मुम्बई, नंदुरबार, राजनांद गांव, रायपुर, सोलापुर, जयपुर, सूरत, खापर, अक्कलकुवा आदि स्थानों से मेहमानों का आगमन हुआ।

मंदाना में प्रतिष्ठा 14 मई को

नंदुरबार जिले के मन्दाना गांव में नवनिर्मित श्री वासुपूज्य परमात्मा के शिखरबद्ध जिन मंदिर की भव्य प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. के शिष्य पूज्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी म. सा. पूज्य मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनिराज श्री समयप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनिराज श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनिराज श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा. आदि 5 एवं पूजनीया संघरत्ना श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री शुभदर्शनाश्रीजी म.सा. ठाणा 2 व पूजनीया खान्देश शिरोमणि साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री चारित्रनिधि श्रीजी म. आदि की पावन निश्रा में वैशाख सुदि 15 को ता. 14 मई को संपन्न होगी।

त्रिदिवसीय कार्यक्रम के तहत ता. 12 मई को पूज्यवरों के प्रवेश के साथ ही कुंभस्थापनादि विधि विधान होंगे। ता. 13 को शोभायात्रा एवं ता. 14 को प्रतिष्ठा होगी। सकल श्री संघ मन्दाना में इस प्रतिष्ठा के लक्ष्य से भारी उत्साह छाया हुआ है। कार्यकर्त्ता इस प्रतिष्ठा को सफल बनाने हेतु पूरी तरह से जुट गये हैं।

तत्त्व परिक्षा

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

जहाज मंदिर पहेली 97

नीचे दिये गये वर्गाकार बोक्स में 15 तीर्थों के प्राचीन नाम दिये गये है। उन्हें खोजिये, प्रकट कीजिये और अंकित करने के साथ-साथ यह भी बताईये कि वह किस नगर का नाम है। कर्णावती उदाहरणार्थ दिया गया है।

शेष 15 तीर्थों के नाम अंकित करो।

उ	ज्ज	य	न्त	गि	रि	म	द	र	द्र	प	ट	व	न
ज्ज	न	व	दा	रा	ह	र	या	पु	पा	कु	ल	द	म
यि	चं	न्द	वा	ता	न	भा	दा	क्क	द	वा	री	स	य
नी	भृ	य	नी	ल	स	ना	दा	ल	लि	ना	ग	ह्र	द
ध	गु	वि	च	छ	ती	त्य	क	व	प्त	ज	सि	ह	द्ध
य	क	य	म	व	पु	र	पु	ध	पु	सु	अ	रि	से
र	छ	श	र्णा	ध्य	पु	हे	ल	र	र	न्द	र्बु	भ	न
ला	जि	क	ख	न	पा	म	क	पु	ना	री	दा	द्र	दि
व	न	गा	द	द	अ	कू	त्ता	लि	को	पु	च	सू	भी
न	द	ह्ला	भ	ज	प	ट	म	वा	डा	पा	ल	रि	म
मा	प्र	म	य	र	कू	स	द्रा	जा	स	पा	हे	च	प
र्ध	त्त	मे	स्थ	त्र	श	म	स	य	म	अ	म	न्द्र	ल्ली
व	रू	ना	चि	अ	ण	हि	ल	पु	र	प	त्त	न	र

	प्राचीन नाम	नया नाम		प्राचीन नाम	नया नाम
1.	कर्णावती	अहमदाबाद	9.		
2.			10.		
3.			11.		
4.			12.		
5.			13.		
6.			14.		
7.			15.		
8.			16.		

- नियम -

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 जून तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल जुलाई में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेताओं को 200 रू. का और 100-100 रु. के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. सातों विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. उत्तर जहाज मंदिर में छपे फार्म में ही भरकर भेजे। फोटो स्टेट कॉपी स्वीकार नहीं की जायेगी।
7. प्रेषक पहेली का उत्तर जहाज मंदिर पत्रिका के कार्यालय पर भारतीय डाक से ही पोस्ट करें।
8. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
9. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-

शा. सुगनचंदजी
राजेशकुमारजी बरडिया
(छबड़ा)
ब्रह्मसर हाल चैन्नई

प्रेषक

नाम ....

पता ....

....

पोस्ट .... पिन ☐☐☐☐☐☐ जिला ....

राज्य .... फोन नम्बर ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

डुठारिया में अंजनशलाका प्रतिष्ठा हेतु प्रवेश समारोह की झलकियाँ

जटाशंकर

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

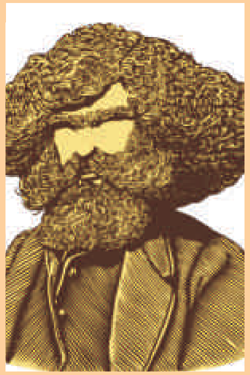

जटाशंकर मुंबई से जयपुर जा रहा था। वह ऊपर की बर्थ पर सो रहा था। उसने देखा- घटाशंकर अपनी धर्मपत्नी के साथ नीचे गपशप कर रहा था। उसकी नींद खराब हो रही थी, पर कुछ भी कर नहीं पा रहा था।

नीचे घटाशंकर अपनी पत्नी से बात कर रहा था। उसकी पत्नी पहली बार रेल से यात्रा कर रही थी। इस कारण वह जिज्ञासा से भरी हुई थी। वह रेल से संबंधित हर वस्तु के बारे में पूछ रही थी। घटाशंकर थोडा झल्ला गया था फिर भी समाधान कर रहा था।

उसकी पत्नी ने जंजीर के बारे में पूछा। घटाशंकर ने बताया- ये जंजीर है। खींचने पर रेल रूक जाती है। वह अत्यन्त हर्षित होती हुई जंजीर खींचने के लिये आगे बढी- जरा देखुं तो सही कैसे रेल रूक जाती है!

घटाशंकर ने कहा- मूर्खता मत कर! यह जंजीर तो किसी आपात काल में ही खींची जा सकती है। कारण बताना पडता है। यदि उपयुक्त कारण नहीं होने पर भी कोई जंजीर खींच लेता है, तो उसे एक हजार रूपये का जुर्माना भरना पडता है।

उसका चेहरा उतर गया। वह उदास हो गई। उसके हाथ जंजीर खींचने के लिये बेताब हो रहे थे। उसने कहा- जो भी होगा, देखा जायेगा। पर जंजीर तो हर हाल में खींचना ही है।

घटाशंकर विचार में पड गया। उसने कहा- जुर्माना भरना पडेगा तो इतने रूपये कहाँ से लायेंगे। मेरे पास तो केवल 500 रूपये ही है। यह कह कर उसने जेब में से 100-100 के पांच नोट दिखाये।

तभी उसकी पत्नी ने मुस्कुराकर बटुआ निकाला और 500 रूपये का एक नोट दिखाते हुए कहा- मेरे पास भी 500 रूपये हैं। किसी मुश्किल वक्त में काम आयेंगे, यह सोच कर तुमसे छिपा कर रखे थे। पर जुर्माना क्यों भरना पडेगा! जब रेल रूकेगी और पूछताछ होगी कि जंजीर किसने खींची तो ऊपर सो रहे इस आदमी की ओर इशारा कर देंगे। जुर्माना वो भरेगा।

यह कह कर उसने जल्दी से जंजीर खींच ली। रेल रूकी। गार्ड आया। पूछा- जंजीर किसने और क्यों खींची!

घटाशंकर ने जटाशंकर की ओर इशारा करते हुए कहा- उसने खींची।

जटाशंकर जाग रहा था। वो सारी बात सुन भी रहा था।

गार्ड ने पूछा तो उसने कहा- हाँ! मैंने ही खींची है।

-क्यों!

-क्योंकि इस व्यक्ति ने मेरे एक हजार रूपये छीन लिये।

घटाशंकर तुरंत बोला- झूठ बोल रहा है यह! मैंने कोई रूपये नहीं छीने। क्या प्रमाण है तुम्हारे पास!

-प्रमाण यही है कि मेरे पास 500 का एक और 100 के पांच नोट थे। 100-100 के पांच नोट तो इसने अपनी जेब में डाले और 500 रूपये का एक नोट इसकी पत्नी के बटुवे में है।

घटाशंकर को एक हजार रूपये देने पडे।

जीवन बहुत मूल्यवान् है। यह व्यर्थ के विचार व आचार में गंवाने के लिये नहीं है। व्यर्थ में जंजीर खींचने जैसी प्रवृत्ति नुकसान पहुँचाती है।

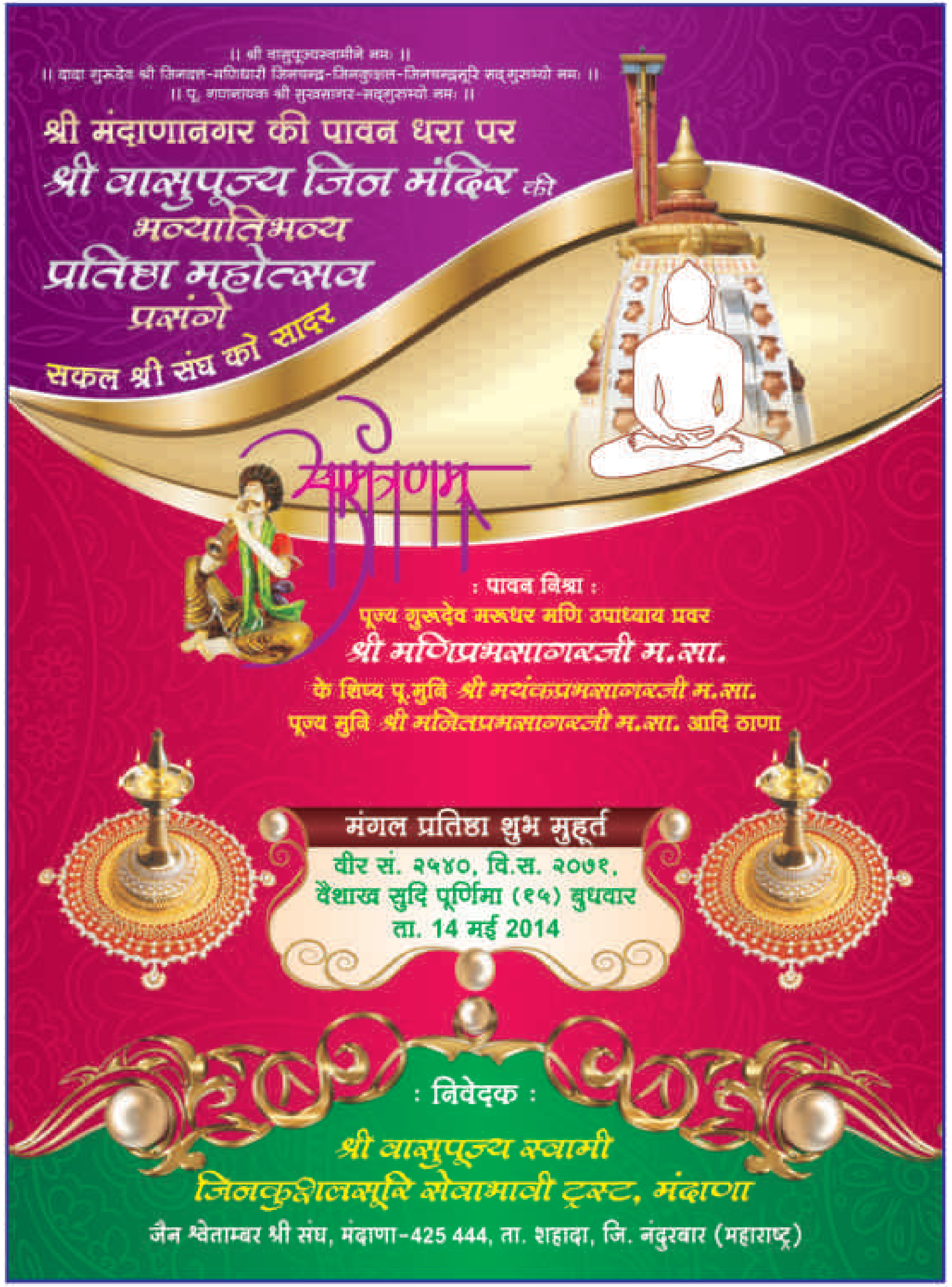

।। श्री वासुपूज्यस्वामीने नमः ।।
।। दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ।।
।। पू. गणनायक श्री सुखसागर-सद्गुरुभ्यो नमः ।।

श्री मंदाणानगर की पावन धरा पर
श्री वासुपूज्य जिन मंदिर की
भव्यातिभव्य
प्रतिष्ठा महोत्सव
प्रसंगे
सकल श्री संघ को सादर

आमंत्रण

: पावन निश्रा :
पूज्य गुरूदेव मरूधर मणि उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
के शिष्य पू.मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा.
पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा

मंगल प्रतिष्ठा शुभ मुहूर्त
वीर सं. २५४०, वि.स. २०७१,
वैशाख सुदि पूर्णिमा (१५) बुधवार
ता. 14 मई 2014

: निवेदक :
श्री वासुपूज्य स्वामी
जिनकुशलसूरि सेवाभावी ट्रस्ट, मंदाणा
जैन श्वेताम्बर श्री संघ, मंदाणा-425 444, ता. शहादा, जि. नंदुरबार (महाराष्ट्र)

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2012- 2014 Date of Posting 7th

।। श्री संभवनाथाय नमः ।। ।। श्री शीतलनाथाय नमः ।।
।। दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी-जिनचन्द्र-जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ।।
।। पू. गणनायक श्री सुखसागर-जिनहरि-जिनकवीन्द्र-जिनकान्तिसागरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ।।

श्री पादरू नगर (राजस्थान) की पावन धरा पर
श्री शीतलनाथ जिन मन्दिर एवं
श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी प्रतिष्ठा की
26 वीं वर्षगांठ-ध्वजारोहण सह
रत्नत्रयी महोत्सव प्रसंगे
सकल श्री संघ को सादर आमन्त्रण

आशीर्वाद
पूज्य गुरुदेव मरूधर मणि उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा

ध्वजारोहण दिवस
ज्येष्ठ सुदि 10 रविवार
दिनांक 8.6.2014 प्रातः 8.00 बजे

अध्यक्ष	सचिव	कोषाध्यक्ष
पी. पुखराज छाजेड़	एच. नेमीचंद कटारिया	एच. मोहनलाल गुलेच्छा
093233 50002	098410 85511	092473 35577

निवेदक : श्री शीतलनाथ भगवान एवं श्री जिनकुशल सूरि दादावाड़ी ट्रस्ट
मैन रोड, पादरू-344801, जिला बाड़मेर, राजस्थान

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451

श्री जिनकान्तिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, सिरोही रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन

e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com
www.jahajmandir.blogspot.in

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408